SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 5, अंक : 5, अगस्त 2021
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आज़ादी का 75वां साल

रक्षाबंधन और घेवर की मिठास

ज़रा याद करो कुर्बानी

अफ़ग़ान में तालिबानी कब्ज़ा

कार्यालय नगर पालिका परिषद्, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद - चन्दौली।

मा0 आशुतोष टन्डन जी
(नगर विकास मंत्री)

श्री संजीव सिंह
(जिलाधिकारी - चन्दौली)

नगर पालिका परिषद, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर जनपद, चन्दौली 15 अगस्त 2021 स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर समस्त नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देती है एवं अपील करती है कि -

एक नया सवेरा लायेगें।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनायेंगे।

- कूड़ा-करकट निर्दिष्ट स्थानों पर ही समय से फेकें तथा सफाई कार्य में नगर पालिका का सहयोग करें।
- घर में जनित कूड़े को गीला व सूखा अलग अलग डस्टबीन में डाले।

'जिस दिन का हमको रहता है इंतजार'

'वो है हमारा स्वतंत्रता दिवस का त्योहार'

- कर का भुगतान समय से करें।
- जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें।
- वृक्षों की रक्षा करें।
- पर्यावरण को स्वच्छ बनायें रखने हेतु वृक्ष लगाये व वृक्षों की देख-भाल करे।

'ना हम भुले हैं, ना भारत'

'आपके बलिदान से हैं, हमारा भारत'

- जल ही जीवन है, टोटी खुली न छोड़े।
- पालिथीन का प्रयोग न करे।
- जानवरों को खुला न छोड़े।
- जन-जन तक संदेश पहुचाना है, पर्यावरण को बचाना है।

'सामाजिक दूरी बहुत जरूरी'

'कोरोना से रहेगी दूरी'

(कृष्ण चन्द्र)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

1. श्रीमती रीना देवी, 2. सुश्री शुभम् भारती, 3. श्री सिकन्दर पासवान, 4. श्री रवि सोनकर, 5. श्री भरत सिंह चौहान, 6. श्रीमती मनीषा यादव, 7. श्री विनय यादव (डब्बू), 8. श्रीमती माया देवी, 9. श्रीमती शीला देवी, 10. श्री वकार जाहिद, 11. श्रीमती सन्तरा देवी, 12. श्रीमती रेखा देवी, 13. श्री जितेन्द्र गुप्ता, 14. श्रीमती पिंकी शर्मा, 15. श्री नायाब अहमद रिंकू, 16. श्रीमती मुर्शिदा बेगम, 17. श्री अशोक कुमार जायसवाल, 18. श्रीमती निधि तिवारी, 19. श्रीमती सरिता पटेल, 20. श्री सुनील विश्वकर्मा, 21. श्रीमती आरती यादव, 22. श्रीमती प्रियंका तिवारी, 23. मो0 ईशा खाँ, 24. श्री बृजेश गुप्ता, 25. श्री राजेश जायसवाल, 26. श्री अशोक सोनकर, 27. आनन्द मोहन चौरसिया, 28. श्री विशाल तिवारी, 29. श्री विकास सिंह, 30. श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता।

(सन्तोष खरवार)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

समस्त सभासद गण
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर-चन्दौली

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 05, अंक : 05, अगस्त 2021

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे

संपादक
ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

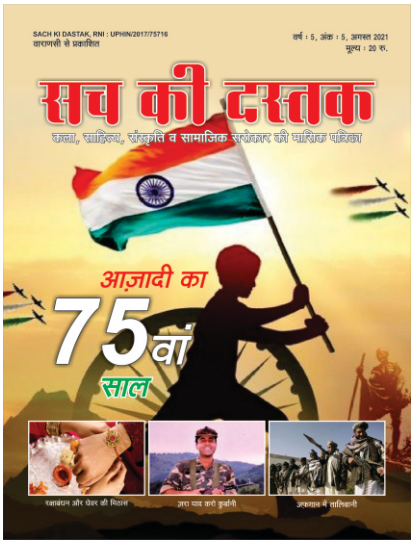

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली, उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे, उत्तराखण्ड
3- प्रभाकर कुमार, बिहार

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
2- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
3- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
4- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
5- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
5- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
6- डिम्पल सानन, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Panjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय	3
2.	धरोहर : ये देश है वीर जवानों का	5
3.	आज़ादी का 75वां साल - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	6
4.	आह्वान - इंदुभूषण कोचगवे, संरक्षक/अभिभावक सच की दस्तक	9
5.	आजादी, अराजकता और हम - शिव मोहन सिंह, देहरादून (उपसंपादक सच की दस्तक)	11
6.	जन्मसिद्ध स्वतंत्रता के मंत्र के उद्घोषक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक - डॉक्टर मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी	13
7.	मेरा प्यारा हिंदुस्तान - मंजु श्रीवास्तव 'मन', अमेरिका	18
8.	मातृभूमि तुझे नमन - सुधा झलानी, नासिक	19
9.	लेख- जाति है कि आख़िर जाती क्यों नहीं? - सोनम लववंशी	20
10.	मुकुल राय के भ्रामक बयान - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	23
11.	दीये की तलाश- आरती रॉय	25
12.	मैं भारत हूँ - जसवीर सिंह हलधर, देहरादून	27
13.	बहनें ऐसी होती हैं - संध्या चतुर्वेदी	29
14.	जन्माष्टमी - अंकुर सिंह	30
15.	जन्माष्टमी विशेष :जानकारियां - नीरज त्यागी	31
16.	अफ़ग़ानिस्तान में तालिबानी कब्ज़ा- आकांक्षा सक्सेना, न्यूज़ ऐडीटर सच की दस्तक	34
17.	खेल पुरस्कार कार्यक्रम स्थगित - मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर सच की दस्तक	38
18.	देवभूमि उत्तराखंड के कुमांऊ के पारंपरिक लोकवाद्य यंत्र - भुवन बिष्ट	40
19.	ज़ायका : रक्षाबंधन में घेवर की मिठास - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	42
20.	विद्या बालन की फिल्म ''शेरनी'' की दहाड़- सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	44
21.	ज़रा याद करो कुर्बानी - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	46
22.	रानी लक्ष्मीबाई - कृष्णकान्त श्रीवास्तव	48
23.	फैशन में है नेल आर्ट - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	52
24.	लोहार्गल धाम की यात्रा - राकेश विश्वनाथ शर्मा, मुम्बई	54
25.	क्या हमने पेड़ लगाया? - चन्दन केशरी, जमुई, बिहार	56

संपादकीय

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामना , दोस्तों! आजादी के 74 वर्ष पूर्ण कर हम सब 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इसकी खुशी पूरे देश वासियों के साथ हमें भी है। लेकिन आजादी के इतने साल बीतने के बाद आज यह प्रतीत हो रहा है कि समय का पहिया जैसे-जैसे घूम रहा है वैसे-वैसे हम स्वतंत्रता आंदोलन के वीर सपूतों को भूलते जा रहे है। सच कहा जाए तो ऐसे कई स्वतंत्रता सेनानी गुमनाम हैं जिनके त्याग बलिदान का इतिहास में जिक्र भी नहीं है। हमें उनको भी इतिहास के पन्नों पर लाकर यथोचित सम्मान देना होगा। बनारस की बिटिया, हम सबकी आदर्श प्रेरणा स्रोत रानीलक्ष्मी बाई को भी हमलोग भूलते जा रहे हैं। मंगल पाण्डेय, सूर्या सेन, लाला हरदयाल, खुदीराम बोस के विषय में बहुतों को पता भी नहीं है, जब कि इनके आजादी के संघर्षों को भुलाया नहीं जा सकता। ये तो कुछ नाम हैं, लेकिन इनकी फेहरिस्त बहुत लम्बी है। स्वतंत्रता सेनानियों एवं उनके प्रतीकों का संग्रहालय भी बनाया जा सकता है। सुभाषचंद्र बोस और लाल बहादुर शास्त्री जी के मौत के राज़ से पर्दा अभी तक नहीं उठ सका? आखिर क्यों? जब आज़ादी के जंग पर गहन मंथन करता हूँ तो मुझे इस बात का दुःख होता है कि हमारे देश में बैरिस्टरों की कोई कमी नहीं थी, पर सब चुप रहे जब सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव पर मुकदमें चल रहे थे । देश को इनकी जरूरत थी लेकिन मौकापरस्त लोगों ने उन्हें शहीद होने के लिए छोड़ दिया। जिसका नतीजा रहा उन्हें अंग्रेजों ने फाँसी दे डाली । इन तीनों ने माँ भारती की रक्षा के लिए हंसते हंसते फांसी को स्वीकार किया। वास्तव में आजादी इन्हीं की वजह से मिली। सुभाष चन्द्र बोस ने आजादी के लिए आजाद हिंद फौज बनाकर अंग्रेज़ो को देश को स्वतंत्र करने के लिए मजबूर कर दिया।उन्हें भी देश के उस समय के जिम्मेदार नेता सुरक्षित नहीं रख सके थे। परिणाम हुआ कि वे गुमनाम हो गए जबकि देश उन्हीं के चलते आज आजाद है। उन्हें भी लोग भूलते जा रहे। इसका मूल कारण बच्चों को गलत इतिहास पढ़ाया जाना है।विदेशियों के आक्रमण और तबाही का इतिहास पढ़ाया जाता हैं, लेकिन आजादी के लिए शहीदों के बलिदानों के विषय में विस्तार से नहीं बताया जाता। ऐसा क्यों है ? इसका जबाब सरकार को देना चाहिए। मन में एक और टीस रह जाती है ।जिन मुगलों ने देश को गुलाम बना कर सैकड़ों साल तक देश पर राज किया वे इतिहास के पन्नों में सम्मान पूर्वक पढ़ाए जाते हैं, लेकिन जिस प्रकार रानी लक्ष्मी बाई और उनकी महिला सेना की अनेक बहनों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ जंग छेड़ी और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, उन लोगों के बारे में किसी को पता ही नहीं है। राष्ट्रवादी इतिहासकारों एवं सरकार को भी इतिहास की इस भूल को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस अंक में हमने तालिबानों द्वारा अफगानियों पर फतह के बाद तालिबानी शासकों द्वारा औरतों पर हो रहे जुल्म के बारे में बताया है। संपादक के रूप में मैं अपने पाठकों व युवाओं को बताना चाहता हूं कि तालिबानों द्वारा अफगानिस्तान पर कब्ज़ा तो लगभग हो गया है । यह कार्य इतना जल्दी नहीं हुआ। इसकी योजना वर्षो से बन रही होगी। अंततः उन्होंने समय की नजाकत को भांपते हुए अफगान पर आक्रमण किया और उसे जीता भी।तालिबान कैसे आगे बढ़ा, उसको किसकी मदत मिली, इन सबको जानना होगा। पूरी दुनियाँ को पता है कि तालिबान आतंकियों का घर है और अफगानिस्तान पर इसने अपना परचम फहरा दिया है। जिससे पूरा देश आतंकित है। सच कहा जाए तो विश्व के कुछ देश जो अपने स्वार्थ में आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगे हैं उनकी पूरी पूरी 'शय' मिली तब ही ये तालिबानी

अफगानिस्तान में सक्रिय हुए और अमेरिकी सेना की वापसी प्रक्रिया के दौरान अफगान पर काबिज हो गए।अमेरिका के छूट के बिना भी यह सम्भव नहीं था । अफगान पर तालिबानों के कब्जे से भारत को भी खतरा हो सकता है। पाक इन्हीं तालिबानों के बदौलत भारत पर दबाव बनाना चाहता है। अब तो पाक , आतंकी गतिविधियों को बढ़ाने के प्रयास में हमेशा रहेगा। लेकिन उनके मंसूबो पर पानी फिर जाएगा। क्योंकि ये बदला हुआ भारत है जो जिस भाषा में समझता उसे भारत अब उसी भाषा में समझाने में समर्थ है। फिर भी हमें सतर्क रहना होगा।

यदि खेल की बात हो तो इस बार का टोक्यो ओलम्पिक खेल हम सब के लिए यादगार बन गया है। नीरज चोपड़ा ने गोल्ड मेडल जीत कर भारत का नाम पूरी दुनिया में रोशन किया है। 1982 के बाद हॉकी में अब जाकर कांस्य पदक मिला। ये गौरव की बात है। कुश्ती व बैडमिंटन में भी हमें पदक मिले है। सुविधा विहीन लड़कियों ने हॉकी में अभूतपूर्व प्रदर्शन कर के सारे देश का दिल जीत लिया। बहुत कष्ट होता है कि हम 135 करोड़ की आबादी वाले देश के हैं और मेडल मात्र 8 क्यों ? इस पर गहनता से विचार किया जाना चाहिए। तब जाकर किसी निष्कर्ष पर आएंगे ।

वैसे आजादी के 75वे साल पूरे होने पर खुशी तो है लेकिन कोरोना काल में आक्सीजन की कमी /कुव्यवस्था से पूरे भारत में कई लोगों की मौत हो गयी। यह सब देख मन विचलित है। एक लंबे अंतराल के बाद स्कूल कालेज खुल रहे हैं। लेकिन अभी पूरी आबादी के तिहाई हिस्से को ही कोरोना की वैक्सीन लग पाया है। बच्चों को भी कोरोना का टीका नहीं लगा है। ऐसे में डर बना रहता है । यदि कोरोना की तीसरी लहर आ गयी तो क्या होगा? तीसरी लहर से बच्चों को खतरा ज्यादा है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि बच्चों को जल्द से जल्द टीका लगायें और पठन - पाठन करवाने वालों को भी एक अभियान चला कर वैक्सीनेशन करवाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

अंत, में सभी पाठकों को रक्षाबंधन और श्री कृष्णजन्माष्टमी की हार्दिक बधाई व शुभकामनायें।

ब्रजेश कुमार

साहिर लुधियानवी
(1921-1980)

ये देश है वीर जवानों का
अलबेलों का मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना
ये देश है दुनिया का गहना।

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की
यहाँ भोली शक्लें हीरों की
यहाँ गाते हैं राँझे मस्ती में
मचती हैं धूमे बस्ती में।

पेड़ों में बहारें झूलों की
राहों में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में
खिलती हैं कलियाँ गालों में।

कहीं दंगल शोख जवानों के
कहीं करतब तीर कमानों के
यहाँ नित नित मेले सजते हैं
नित ढोल और ताशे बजते हैं।

दिलबर के लिये दिलदार हैं हम
दुश्मन के लिये तलवार हैं हम
मैदां में अगर हम डट जाएं
मुश्किल है के पीछे हट जाएं

आज़ादी का 75 वां साल

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

हर नयी उम्मीद के साथ आज़ादी के 75 साल बीत गए समय के साथ-साथ देश में भी बदलाव आया जिसे सम्पूर्ण विश्व आज खुली आखों से देख रहा है। आज का बदलाव आप बहुत साधारण सी चीज ट्रक के पीछे लिखी शायरी के बदले यह लाईन लिखी देख सकते हैं कि ये नया भारत है जो घर में घुस कर मारता है। आज देश में हर घर शौचालय है और हर घर घुएं से मुक्त है यानि भारत सरकार द्वारा सभी माताओं को मुफ्त गैस कनेक्शन दिये गये हैं और निराश्रितों को रहने के लिये कॉलोनी मिली है पर हां यह बात और है कि गरीबों का मुंह का निबाला कुछ अमीर छीन लेते हैं जैसे सि कॉलोनी को भी किराये पर देकर कुछ षड्यंत्रकारी गरीबों को लूट रहे हैं। सरकार की योजनाओं पर पानी फेरने वालों की कमी नहीं है। आज हर क्षेत्र में भारत ने पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है।

आज जब अफगानिस्तान में तालिबानियों का कब्जा है तब भारत सरकार की कुशल कूटनीति से वहां फंसे सभी भारतीयों को सुरक्षित भारत लाया जा रहा है।

आज हमारे देश का अनुसरण भी विश्व के ज्यादा देश कर रहे है। आज सम्पूर्ण विश्व योगा की एहमियत समझ कर योगा दिवस मनाकर भारत को सैल्यूट कर रहा है। इसके अलावा कोरोना की प्रथम लहर में भारत ने कैसे देश को सुरक्षित रखा कितनी असरदार कोरोना वैक्सीन लगवायी और अपने पड़ोसी कदेशों को भी पहुंचायी।इस पर यूएन ने भारत के कार्यों की काफी सराहना की। हमने विपरीत परिस्थिति स्वयं को सुपर पावर समझने वाले देश अमेरिका तक की मदद की और दिखाया की भारत कितना मेडिकल फेसेलिटी से लेकर अंतरिक्ष में सुरक्षित सेटेलाईट लगाने तक में कितना आगें निकल चुका है।

जब पाकिस्तान ने भारत पर बुरी नज़र डाली

पाकिस्तान की इस हिमाकत का जबाब भारतीय सेना ने उसी के घर में घुसकर एयर स्ट्राइक से दिया और जब चीनी सेना ने भारत पर बुरी नज़र डाली तो भारतीय सैनिकों ने लद्दाख में अपने बाहूबल से दिया और बतलाया कि ये आज का भारत है। मेरे वीर जवानों ने उनको यह समझा दिया दिया कि आक्रमण पहले हम करते नहीं लेकिन कोई करता है तो हम माकूल जबाब देगें। ये सब बदला 75 साल में।

लेकिन कोरोना की प्रथम लहर व द्वितीय लहर ने ये भी बता दिया कि हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था अभी सुधार की श्रेणी में खड़ी है। लाखों की संख्या में हुई दर्दनाक मौतें देश की कमजोर कड़ी को दर्शाती है।गंगा में बहे शव भी बतलाती की हमारा वजूद आजादी के 75 साल बाद क्या है? जब देश आजाद हुआ तो लगा कि मेरा मुल्क बहुत जल्दी तरक्की करेगा लेकिन केंद्र सरकार की पुरानी व्यवस्था के कारण विशेष तरक्की नही हुई।

आजादी की लड़ाई में न जाने कितने लोगों ने अपनी प्राणों की आहूती दे दी लेकिन क्या नेता लोग उन्हें याद करते हैं।याद करना तो दूर बहुत से स्वतंत्रता सेनानियों के नाम तक नहीं जानते।क्या कोई ऐसा संग्रालय बना जहाँ स्वतंत्रता आंदोलन में मारे गये लोगों के बारे में लिखा है। ये सही है कि युद्ध में मारे गए वीर जवानों के लिए अलग से स्थान दिया गया।इसमें ऐसे लोग भी जिन्होंने प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में भारत के तरफ से अंग्रेजों के साथ युद्ध लड़ा लेकिन मुझे नही लगता कि आज के नेताओं को देश की चिंता है। हर नेता के पास आय से ज्यादा सम्पत्ति है हजारों करोड़ की पर इनसे सच सवाल कोई पूछने वाला नहीं।

जो देश के लिए कुर्बान हो सिर्फ़ उसे ही शहीद कहना चाहिए ।स्वतंत्रता आंदोलन में जिन्होंने ने गोलियां खाईं ।फांसी को चूँम लिया। खुद को देश के लिए आजादी का संघर्ष करते हुए स्वयं को गोली मार ली जैसे चन्द्र शेखर जिन्होंने इलाहाबाद में अल्फ्रेड पार्क में कनपटी में अपनी ही गोलियां डाल ली और शहीद हो गए।क्या देश की पिछली सरकारों ने इसपर कुछ काम किया ?इसका जबाब तो सरकार ही दे सकती है। ये तो राष्ट्रीय स्तर की बात है।ऐसे न जाने अंग्रेज़ो के 90 साल के शासन कितने नाम हो जो आजादी के लिए लड़ते - लड़ते मरे। रानी लक्ष्मीबाई ,मंगल पांडेय जैसे कई नाम नाम खुदीराम बोस इन जैसे लोगों को ही शहीद का दर्जा मिलना चाहिए।इतिहास को बदलने की आवश्यकता है।हमें उन लोगों के विषय में जानने की जरूरत है जिन्होने स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए आहुति दी न कि आक्रांता मुगलों के विषय में।

आजादी के 75 साल हो गए लेकिन आज भी गरीबों और बेरोजगारों की संख्या में कमी नही हुई है। सच तो यही है आज गरीब - गरीब होता जा रहा है और अमीर- अमीर बनता जा रहा है क्यों ? इसका जबाब कौन देगा ?क्या इन 75 साल में बारीकी से नही सोचना चाहिए था इसके पीछे क्या कारण है? आज छोटे-छोटे मुल्क इजरायल,जापान, हमसे कितने आगें निकल गए उनके तुलना में हम कहाँ है? जापान में इन सालों में कितनी विपदा आयी लेकिन आज भी इन सब विपदाओं से गुजरते हुए भी हमसे काफी आगे हैं । इजरायल को देख ले तो ऐसी टेक्नोलॉजी उसने हासिल कर रखी जिसे हम उससे लेने के लिए आतुर रहते है ये नही सोंचते है हम उससे बेहतर क्यों नही बना सके? देश का टेलेन्ट विदेश गया और आरक्षण प्राप्त सरकारी नौकरी कर रहे तो अगर पुल गिरते हैं तो हैरानी कैसी? चीन को सब कोसते है लेकिन चीन से हम तुलना भी नही कर सकते है वो हमसे हर क्षेत्र में आगे है।

ऐसा क्यों है इस पर गहनता से किसी ने नही सोचा यदि ऐसा किया होता

तो आज हम भी सबसे आगे होते लेकिन अफसोस ऐसा नही है।हमने विकास के लिए पंचवर्षीय योजना तो बनायी लेकिन उसकी समीक्षा सही से नही कर पाए नही तो आज आगे होते ।इसलिए यह कहा जा सकता कि सरकार ने हर क्षेत्र के विकास के लिए फंड बनाये लेकिन कार्य क्या हुआ इसकी समीक्षा केवल कागजों पर ही रही है । फ़ाइल अधिकारी देखेगा तो निवेश पूछेगा तो उसे कहना व्यवस्थित करे यही करते आये है।मेरे देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था है।सांसद ,विधायक इनके अंग है केवल एक बात सच्चाई से बता सकता है कितने सांसद अपनी संसद निधि को लगाते है।विधायक अपनी विधायक निधि को लगाते है या बचाते हैं ?

सच यह है कि लगभग 60 प्रतिशत लोगों की सांसद निधि,विधायक निधि जस की तस रह जाती है खर्च होती ही नही।इसी से समझ सकते है कि देश का कितना विकास इन नेताओं ने 75 सालों में किया होगा।देश में इनके पैसे लगते तो विकास होता तो विश्व पटल पर दिखता भी।इनके पैसों से रोजगार का सृजन होता बेरोजगार को रोजगार मिलता क्योंकि उनके पैसों से कल कारखाने खुलते लोगों की जरूरत दिखती तो उनके पास जाते और नौकरी करते ।

वर्तमान समय में बेरोजगारी एक समस्या बन गयी है।75 साल बीत गए लेकिन भूख से मौत हो रही है।इलाज से मौत हो रही है। रोजगार मांगो तो डंडे मिलते है।क्या गलती की है युवाओं ने।आप ने पाठ्यक्रम बनाया हमने पढ़ाई की और पढ़ने के बाद नौकरी तो आप ही दोगे किससे मांगें नौकरी सरकार ही बताए? बेरोजगारों पर लाठियों संविधान में किस कानून के तहत है?

75 सालों में किसी सरकार ने रोजगार के सृजन पर काम नही किया एक पालिसी बनाकर क्या इस पर काम नही किया जा सकता था? सरकार बदलती रही झण्डा फहराते रहे लेकिन रोजगार कैसे बढेगा काम नही हुआ। आज नौकरी में कटौती की जा रही है। रेल हो उड्डयन हो हर जगह कर्मचारियों की संख्या को कम किया जा रहा।जो दो वक्त की रोजी रोटी कमा रहे है उन्हें भी बेरोजगार किया जा रहा है।क्या यही आजाद भारत का 75वां साल है।जिन्होंने 65 सालों तक देश चलाया और जो आज चला रहे है सब जिम्मेदार है।75 साल बीत जाने के बाद सरकारी अस्पतालों की काफी कमी है अस्पताल है तो डॉक्टर नही वो है तो पैरामेडिकल स्टाफ नही, आधुनिक मशीनें नहीं, ब्लडबैंक नहीं।कोरोना ने दिखाया कि हम स्वास्थ के क्षेत्र में बहुत पीछे हैं।

यदि खेल पर बात करे तो भी कड़वा अनुभव होगा आजादी के पहले हॉकी में हमसे कोई आगें नही था आज हम कहाँ से कहाँ आ गए टोकियो ओलम्पिक में कांस्य पदक पाए आजादी के पहले इसमे गोल्ड तय रहता था।फिर भी खिलाड़ियों की मेहनत रंग लाई इस बार हम सफल हुए तो।हमें एक गोल्ड मिला तो हमने ढ़िढोरा पीटा लेकिन सोंचिये यदि हम 30 से अधिक स्वर्ण मिलता तो क्या स्थिति होती ।नीरज चोपड़ा ने मां भारती की लाज रख ली और सीना हम सब का चौड़ा कर दिया हमें नाज़ है उन सब खिलाड़ियों पर जो देश के लिए मैडल लेकर आये।और उन पर नाज है जिन्होंने इस महाकुंभ में भाग लेकर एक अच्छा प्रयास किया।यदि खेल की नीति सही होती तो रिजल्ट और भी जबर्दस्त होते। उम्मीद है कि भविष्य में परिणाम आशा से कहीं अच्छे आएंगे।

ऐसा नही है कि हमने केवल केवल 75 सालों में आजादी मिलने के बाद खोया ही खोया है तो यह बात गलत है।हम चांद पर भी पहुँचे हमने दुनियां को दिखाया की हमारी सेनाओं की शक्ति कैसी है।हमने देश में ही सैन्य क्षेत्र में बड़े प्लेटफार्म तैयार किये।हमारे वैज्ञानिकों ने सरकार के सहयोग से कम दिनों वेक्सीन बनायी। सब देखते रहे हम वैक्सीन ले आये।हमने कोरोना जैसे विकट समय में विपदा को अवसर में बदल दिया हम पीपी ई कीट मंगवाते रहे हम विश्व के सबसे बडे सफ्लायर बन गए वेंटीलेटर देश में इतने बड़े पैमाने तैयार किये जाने लगे।मास्क भी घर घर बनकर रोजगार का माध्यम बनने लगे। आज हम सप्लायर है । देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी सोच का परिणाम रहा कि हम सबसे आगें निकल रहे है, इन क्षेत्र में।

सोचिए! यदि जिस तरह सरकार ने कोरोनकाल में काम किया यदि 75 सालों में वही काम तत्कालीन सरकारों ने किया होता तो शायद आज बेरोजगारी नही रहती।सांसद विधायकों का भी फण्ड विकास के कार्यों में खर्च होता तो आज आजादी का 75वां साल मनाते हुए एक अलग सी खुशी होती। लेकिन कुछ भी हो मुझे अपने देश पर नाज़ है।मेरा तिरंगा मेरी शान है।मेरी भी एक इच्छा है कि मेरी भी मौत देश के काम आ जाये और मैं भी तिरंगे में लिपटाया जाऊं।वंदेमातरम्।

'आह्वान'

15 अगस्त 2021 को वर्तमान भारत अपनी स्वतंत्रता के 74 वर्ष पूरे कर लेगा। आज विश्व की निगाह भारत पर टिकी हुई है। भारत एक उदार, पंथनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश है, जो विभिन्न धर्म, भाषा, परिधान एवं संस्कृति से सुसज्जित होने के बाद भी अनेकता में एकता का प्रतीक माना जाता है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने चतुर्दिक बहुमुखी विकास कर राजनीतिक क्षितिज पर अपनी सशक्त उपस्थिति का एहसास कराने में आशातीत सफलता प्राप्त की है। फिर भी सामाजिक विषमताओं, देश के बदले हुए हालातों, विशेष कर भ्रष्टाचार, जातीय संघर्ष, गरीबी, आरक्षण, महामारी, बिगड़ती हुई अर्थव्यवस्था, जन संख्या का दबाव, गिरती हुई नैतिकता और साम्प्रदायिक उन्माद, अलगाववाद, प्राकृतिक आपदाएँ आदि कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिनसे जूझते हुए एकता, शान्ति, सद्भाव, आत्मीयता की स्थापना करते हुए आत्म निर्भर हो कर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहना हमारा अभीष्ट है।

इंद्रभूषण कोचगवे

1 पवित्र देव-भूमि में, असंख्य वीर साहसी।
समस्त नीर-रश्मियाँ, बनी सुधा-प्रवाह सी।
समस्त शक्ति से बढ़ो, परम्परा निबाह दो।
हिमाद्रि श्रृंखला खड़ी, चलो इसे सँवार दो।

2 कई विशेष बोलियाँ, कई पवित्र धर्म हैं।
कहीं पहाड़ श्वेत तो, कहीं बयार गर्म है।
कई विशाल क्षेत्र की, छटा बड़ी विशेष है।
वहीं कई प्रदेश से, बना सुरम्य देश है।

3 अभी अभी प्रभात में, सुगंध प्यार की मिली।
चले सुपंथ खोजते, नवीन राह भी मिली।
जगी स्वतंत्र कल्पना, सधे हुए विचार की,
सजी सजीव अल्पना, नए-नए विधान की।

4 कहीं मराल श्वेत तो, कहीं मराल श्याम हैं।
रहा सदैव तैरता, यही बड़ा कमाल है।
कभी पवित्र ताल में, कभी सुदूर स्वर्ग में।
रुका नहीं थका नहीं, लगा रहा सुकर्म में।

5 कहीं सरोज नील तो, कहीं सफेद लाल है।
खिला सदैव पंक में, प्रभुत्व तो विशाल है।
प्रसन्न मातृ शारदा, मराल श्वेत साथ में,
दिखें सदैव पद्म को, लिए हरीश हाथ में।

6 प्रशस्त पंथ है पड़ा, चलो सदा विचार के।
जहाँ नवीन राह हो, बढ़ो जरा सँभाल के।
नए-नए प्रभात में, नई विभा समा रही।
चलो उठो बढ़े चलो, वसुंधरा बुला रही।

7 विलुप्त हो गई निशा, प्रसन्न हो रही धरा।
प्रशस्त पंथ है खुला, बनी नई परम्परा।
रुको नहीं, झुको नहीं, नई प्रभा बुला रही।
बढ़े चलो चले चलो, नयी दिशा दिखा रही।

8 सदैव मातृभूमि की, करें विशुद्ध आरती।
चलो इसे सँवार के, बनें प्रबुद्ध भारती।
सुकर्म सत्य धर्म के, नए-नए विचार दो।
चलो उठो सभी युवा, वसुंधरा निखार दो।

9 नवीन पुष्प-कुंज से, सजीव हो रही धरा।
नए-नए विकास की, बनी रहे परम्परा।
प्रबुद्ध हों विचार से, कहीं नहीं विवाद हो।
सुखी रहें सभी यहाँ, कि ज़िन्दगी निहाल हो।

■ ■

तुम किसी को दोष मत दो। अगर तुम अपने हाथ आगे बढ़ाकर किसी की मदद कर सकते हो तो करो, अगर नहीं कर सकते हो तो अपने हाथ बांधकर खड़े रहो। अपने वालों को शुभकामनाएं दो और उन्हें उनके रास्ते जाने दो। आप दोष देने वाले कोई नहीं होते हैं।

स्वामी विवेकानंद

वधशाला है तेरा गाँव।

अशोक मिश्र
प्रताप गंज, जौनपुर

मंदिर में तुम उसे पूजते
औ'रस्ते में चीर-हरण,
रावण के पापाचारों में
दोषी उतना कुंभकरन।
पत्थर का तो पूजन-वंदन
और मानवी को छलते,
मैला करते उस आँचल को
जिसकी छाया में पलते।
कभी जानकी,कभी द्रौपदी,
कभी पद्मिनी रोई है,
तेरे ही कुछ लोभ-पाप से,
कहीं अहिल्या सोई है।
कैसे पाषाणी दोषी है,
और यह गौतम दूध-धुला,
इन्द्रसभाएं कहाँ बंद हैं,
ओ उद्धारक!प्रश्न खुला।
नहीं सुरक्षित रही कोख में,
नहीं सुरक्षित डाली पर,
आतंकित हर जगह निर्भया,
प्रश्न-चिन्ह है माली पर।
हर आहट में एक त्रास है,
सन्नाटे में भी डर है,
चेहरा-चेहरा लगे दुःशासन,
किसे कह वह रहबर है।
उसे चाहिए पालन-पोषण,
नेह-गेह और शीतल छाँव,
डरी-डरी है सोन चिरैया,
बधशाला है तेरा गाँव।

■ ■

आजादी ,अराजकता और हम

शिव मोहन सिंह
उपसम्पादक
सच की दस्तक

आज हम समय के ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जहाँ आजादी के सात दशक पूरे होने के बाद भी आजादी(?) के नारे लगा करते हैं। आज की पीढ़ी शायद यह भूल गई है या भूलने का सुनियोजित भ्रम फैलाया जा रहा है कि हमारे पूर्वजों ने जिस आजादी के लिए संघर्ष किया था,जिस आजादी के लिये अपने प्रांण तक न्योछावर किये, उसके मायने क्या थे।आज सबसे बड़ा प्रश्न उसी आजादी को बचाए रखने का है। आज अपने-अपने तरीके से आजादी को परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है। देश के एक बड़े भू-भाग पर कुछ लोग अपनी तथाकथित आजादी के लिए हिंसक संघर्ष कर रहे हैं । हजारों नरसंहार के बाद भी उनकी रक्त पिपासा शांत होने का नाम नहीं ले रही । वह जिन अधिकारों और समानता की बात कर रहे हैं, वह कब का अर्थहीन साबित हो चुकी है। कश्मीर घाटी तो कश्मीर घाटी अब लोकतांत्रिक धरना प्रदर्शनों में भी जब-तब मौका देख कर आजादी के नारे लगने लगते हैं। हद तो तब होती है जब कुछ विद्यालयों में भी आजादी के नारे सुनाई पडते हैं। क्या सचमुच में इन सब को आजादी चाहिए? नहीं। उन्हें न स्वतंत्रता चाहिए ,न समानता और न बंधुत्व ही । यह मात्र देश को अस्थिर करने की एक सोची समझी कुत्सित चाल ही प्रतीत होती है और कुछ नहीं । मजहबी नारे की चाशनी में आतंक एवं अलगाववाद का बीजारोपण

कत्तई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता । जरा सोचिए, देश की आजादी के प्रतीक आन -बान -शान लाल किले पर दुर्व्यवहार करके किसानों का कौन-सा भला हो सकता है।

आजादी का एक तात्पर्य अभिव्यक्ति की आजादी से है, किंतु सड़कों, चौराहों से लेकर फेसबुक सोशल मीडिया में जो अभिव्यक्ति देखने-सुनने को मिल रही है, वह कुछ और ही इशारा करती है। आज राजनीति जन-जन के दिलो दिमाग पर बढ़-चढ़ कर राज कर रही है और राजनीति का आज स्तर क्या है,यह छिपी हुई बात नहीं रह गयी है। भ्रम का वातावरण फैलाव पाता जा रहा है। नैतिकता और देशभक्ति की बातें गौड़ होती प्रतीत हो रही हैं।

हमें आजादी, अराजकता एवं उछृंखलता में अंतर को समझना होगा । एक ओर जहाँ देश विरोधी शक्तियां देश में अराजकता फैलाने के लिए तरह-तरह की साजिशें रचने में लगी हुई हैं, वहीं कुछ युवा वर्ग भ्रमित होकर उच्छृंखल व्यवहार करते नजर आते हैं । यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग मानसिक गुलामी के दौर से गुजर रहा है। सबसे पहले, अपने आप को उस मानसिक गुलामी से बाहर निकालना होगा। सहमति और असहमति के बीच अभद्रता के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। हमें अपने वैचारिक विरोध को महत्व देना होगा। समाज में विकराल रूप धारण करती भूख , गरीबी , बेरोजगारी, असमानता की समस्या के खिलाफ साझी लड़ाई लड़नी होगी। देश हित को हर हाल में सर्वोपरि रखना होगा । इसके लिये हमें सतर्क भी रहना होगा। तभी हम देश की आजादी एवं पावन पर्व स्वतंत्रता-दिवस की पावनता को अक्षुण्ण रख सकेंगे।

जय हिंद।

जन्मसिद्ध स्वतंत्रता के मंत्र के उद्घोषक
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी
पूणे महाराष्ट्र

हमें तुम्हारा स्मरण सर्वदा स्फुरणदायि हो चाह यही।
करें तुम्हारा सद्गुण कीर्तन अन्य कामना किमपि नहीं॥
हमें न कुछ भी भाये पर मन स्वदेश हित में लगा रहे।
और इसी की सेवा में रत सदा हमारा देह रहे ॥

किसी प्राचीन कवि द्वारा रचित एक मराठी कविता का मेरे द्वारा किया गया भावानुवाद.

'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूँगा' इस मंत्र की उद्घोषणा करने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारत के दूसरे स्वातंत्र्य समर के पहले सेनापति थे। सन् 1818 में पेशवा बाजीराव द्वितीय की पराजय के साथ पंजाब को छोड़ शेष सारा भारत अंग्रेजों का गुलाम बन गया। सन् 1839 में महाराजा रणजीत सिंह जी की मृत्यु के बाद पंजाब की भी आज़ादी समाप्त हो गई। उसके बाद सन् 1857 में भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया पर अनेक कारणों से वह असफल हो गया। लेकिन उसका इतना प्रभाव अवश्य पड़ा कि भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया और भारत सीधे

इंग्लैंड के अधीन हो गया। पराजय अवश्य हुई पर स्वतंत्रता की चेतना की लौ बुझ गई हो ऐसा नहीं था। देश के विविध भागों में छोटे मोटे उठाव हुए परन्तु अंग्रेज़ी साम्राज्य पर बहुत प्रभाव डाले ऐसा कुछ नहीं हुआ।ऐसी स्थिति में पूरे देश में एक बार पुनः स्वतंत्रता की अलख जगाने, राख से ढक गई आज़ादी की वन्हि को पुनः प्रज्वलित करने और भारत में अंग्रेज़ी राज्य के प्रति असंतोष उत्पन्न करने के लिये भारत माँ का एक सपूत मैदान में आया जिसका नाम था बाल गंगाधर तिलक (मूल मराठी उच्चार के अनुसार बाळ गंगाधर टिळक)।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम अनेक धाराओं में लड़ा गया और उनमें से प्रत्येक धारा का सम्बन्ध तिलक से है।श्री अ.ज.आजगांवकर ने एक पुस्तक लिखी है मराठी में 'लोकमान्य टिळक आणि त्यांचे क्रांतिकार्य'। उसमें एक घटना का वर्णन है। यह सही है कि ऐसी घटनाओं की सत्यासत्यता के लिये अन्य प्रमाण कभी भी नहीं मिल सकते और हमें केवल बताने वाले की बातों पर विश्वास करना पड़ता है। उस घटना के अनुसार यह बात सन् 1905 की है जब तिलक अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के लिये वाराणसी गये हुए थे। उस समय तक वे एक राष्ट्रीय नेता के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुके थे। वाराणसी में उनके प्रवास के दौरान एक ब्राह्मण भोज का आयोजन किया गया था। भोजन पंक्तियों में बैठ कर होना था। और योजना ऐसी की गयी थी कि तिलक के बग़ल में एक विशिष्ट व्यक्ति बैठे। वे विशिष्ट व्यक्ति थे 1857 की क्रान्ति के एक सेनापति नानासाहब पेशवा जिनके बारे में हम इतना ही जानते हैं कि संग्राम के विफल होने के बाद वे नेपाल की तरफ़ चले गये और अंग्रेजों के हाथ कभी नहीं लगे। इस घटना के लेखक के अनुसार वे जीवित थे और गुप्त रूप से कुछ न कुछ प्रयास करते रहे थे। तिलक से उनकी यह अत्यन्त गुप्त मुलाक़ात भी उनकी उसी योजना का भाग थी। तिलक को भी सूचना थी कि उनके बग़ल में कौन बैठने वाला है। भोजन के दौरान नानासाहब ने तिलक से कहा कि अब भी उनके पास कुछ धन है। तिलक का देश की अनेक बड़ी रियासतों जैसे कोल्हापुर, बडौदा आदि के राजाओं के साथ बहुत अच्छे सम्बन्ध थे और वे तिलक को बहुत मानते थे। तो नानासाहब ने प्रस्ताव दिया कि तिलक इन राजाओं का एक संगठन बनाएँ जो गुप्त रूप से सैन्य शक्ति खड़ी करे और देश में 1857 की तरह एक बार और बहुत बड़ा उठाव किया जाय। इसके लिये आवश्यक धन की व्यवस्था वे करेंगे। तिलक ने नानासाहब को उत्तर दिया कि समय बहुत बदल चुका है। अब आपकी ये पुरानी पद्धति की युद्ध और क्रांति की योजनाएँ सफल होने वाली नहीं। अब स्वतंत्रता का आंदोलन केवल जन जागरण से ही होगा। राजा महाराजाओं का काल अब बीत चुका है।

ऐसा होते हुए भी तिलक अपने समय के सशस्त्र क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत थे इसमें कोई सन्देह नहीं। तिलक अपने बचपन में ही वासुदेव बलवंत फड़के का क्रांतिकार्य देख ही चुके थे। फड़के के प्रति तिलक के मन में बहुत सम्मान की भावना थी। सन् 1879 में अदन के कारागृह में जब फड़के की मृत्यु हुई उस समय तिलक 23 वर्ष के युवक थे। 1890 के दशक में जब भारत में ब्यूबॉनिक प्लेग फैला था तब उससे बचाव के नाम पर पुणे के कलक्टर रैंड ने जनता पर भयानक अत्याचार किये थे जिनका तिलक ने अपने समाचारपत्र केसरी में अत्यन्त कठोर शब्दों में निषेध और विरोध भी किया था। रैंड के उन्हीं अत्याचारों से भड़क कर सन् 1897 में चाफेकर बन्धुओं ने उसकी हत्या कर दी। वे चाफेकर बन्धु (विनायक, दामोदर और वासुदेव) तिलक से बहुत प्रभावित थे। अंग्रेजों ने तिलक पर भी रैंड की हत्या के लिये उकसाने का मुक़दमा चलाया। सरकार इस बात को तो अदालत में प्रमाणित नहीं कर सकी फिर भी जनसामान्य में सरकार विरोधी भावनाएँ भडकाने के आरोप में 124 ए इस राजद्रोह की धारा में तिलक को दो वर्ष के सश्रम कारावास का दण्ड अवश्य भुगतना पड़ा।

तिलक सशस्त्र क्रान्ति के विरोधी नहीं थे पर उसे वे तत्कालीन परिस्थितियों में अव्यावहारिक मानते थे। फिर भी हम सभी जानते हैं कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर लोकमान्य तिलक के ही अनुयायी थे। आगे चलकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने सावरकर से ही प्रेरणा प्राप्त की थी जिसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध के समय आज़ाद हिन्द फ़ौज के निर्माण के रूप हुआ। इनके अतिरिक्त जो मुख्य धारा का आन्दोलन था और जो आगे चल कर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हमने लड़ा उसके भी मूल स्रोत तिलक ही थे इसमें कोई संशय नहीं। सन् 1904 के बंग भंग विरोध के आन्दोलन के लिये तिलक ने जिस चतुःसूत्री योजना का

उद्घोष किया था वही बाद के सारे आन्दोलनों की गंगोत्री बना। वे चार सूत्र थे स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और बहिष्कार। उसी समय सारे देश में जगह जगह विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलायी जाने लगीं, लोगों ने स्वदेशी पोशाक पहनना प्रारम्भ किया, अपनी भाषा को अंग्रेज़ी से अधिक महत्व दिया जाने लगा और सारे देश में राष्ट्रीय शिक्षा के लिये विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय खोले जाने लगे। सारे देश में एक ऐसी हवा बहने लगी जो एक नया सन्देश लायी थी, नया सुवास फैला रही थी और देश जाग उठा था। जागरण के इस मन्दिर पर सुवर्ण शिखर चढ़ाने का काम स्वयं अंग्रेज सरकार ने किया सन् 2008 में तिलक को राजद्रोह के दूसरे मुकदमे में फँसा कर छः वर्ष के लिये कालेपानी की सजा दिलवा कर म्यांमार के मंडाले की जेल में डाल कर। जिस समय तिलक को हुई सजा का समाचार मिला सारे देश में बिना किसी दल के आव्हान के स्वयंस्फूर्त ढंग से सार्वजनिक हड़ताल हो गई। यह था वह लोकजागरण जो तिलक ने सफलतापूर्वक कर दिखाया था। वे अपने से लोकमान्य हो गये। उनकी यह लोकमान्यता ही अंग्रेज़ी सरकार को काँटे की तरह चुभती थी। एक अंग्रेज़ी पत्रकार वेलेण्टाइन चिरोल ने उन्हें निन्दात्मक रूप से 'भारतीय असन्तोष का जनक' कहा था किन्तु वास्तव में तिलक का इससे अच्छा वर्णन और कुछ हो ही नहीं सकता।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म दि. 23 जुलाई, सन् 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण भाग में रत्नागिरी में एक चित्पावन ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता श्री गंगाधर राव तिलक तत्कालीन बॉबे प्रेसिडेंसी में शिक्षा विभाग में विद्यालय निरीक्षक के पद पर कार्यरत थे। नामकरण के समय बालक का नाम रखा गया था केशव लेकिन प्यार से लोग उन्हें बाल कहते थे। संयोग से विद्यालय में प्रवेश के समय केशव के स्थान पर बाल ही लिखवा दिया गया इसलिये आधिकारिक रूप से वे बाल गंगाधर तिलक हो गये। बचपन से वे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के थे।सभी विषयों में उनकी समान पटुता थी किन्तु उनके प्रिय विषय थे संस्कृत और गणित। पुणे के डेकन कॉलेज से उन्होंने बी.ए., एल. एल. बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि वे अंग्रेज़ी सरकार की नौकरी नहीं करेंगे। इसलिये उन्होंने अपने समान विचार वाले कुछ मित्रों के साथ मिल कर पुणे में डेकन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की और उसके अन्तर्गत न्यू इंग्लिश स्कूल नामक विद्यालय प्रारंभ किया। विद्यालय में तिलक मुख्य रूप से गणित ही पढ़ाते थे। आगे चल कर डेकन एजुकेशन सोसाइटी ने फ़र्ग्युसन कॉलेज नामक एक

महाविद्यालय की भी स्थापना की।

लेकिन तिलक ने अनुभव किया कि विद्यालयीय शिक्षा द्वारा वे उस प्रकार की जन जागृति का काम नहीं कर सकते जिससे अंग्रेज़ी साम्राज्य के प्रति भारतीयों के मन में अप्रीति की भावना भरी जा सके। इसके लिये आवश्यक था अपने विचारों को व्यक्त कर सकने वाला एक समाचार पत्र। इसलिये उन्होंने केसरी नामक एक मराठी और मराठा नामक एक अंग्रेज़ी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। केसरी अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिये था तो मराठा वही बात सरकार तक पहुंचाने के लिये। इन समाचार पत्रों की विशेषता उनमें छपने वाले समाचारों के लिये उतनी नहीं थी जितनी उनमें तिलक के लिखे सम्पादकीय लेखों के लिये। इन सम्पादकीयों द्वारा तिलक देशप्रेम, राष्ट्रीयता, विदेशी दास्यत्व की भयावहता, भारतीय अस्मिता को जगाने का कार्य करने लगे। केसरी के ब्रीद वाक्य के रूप में उन्होंने भर्तृहरि का यह श्लोक चुना जो रोज केसरी के नाम के साथ ही छपता था।

'स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदान्धेऽक्षण सखे।
गजश्रेणीनाथ त्वमिह जटिलायां वनभुवि॥
असौ कुम्भिभ्रान्त्या खरनिखरविद्रावित महा।
गुरुग्रावग्रामः स्वपति गिरिगर्भे हरिपतिः॥'

यह अन्योक्ति अलंकार का अन्यतम उदाहरण है। कवि जंगल में ऊधम मचा रहे हाथी से कह रहा है कि अरे मद में मत्त हुए हाथी! इस जंगल में क्षण भर भी मत रुको।अभी भ्रम के कारण भयानक नाखूनों वाला सिंह गुफा के अन्दर सोया हुआ है (उसके जगने के बाद तुम्हारी खैर नहीं)।

इसीलिये तिलक के समाचार पत्र का नाम केसरी भी एकदम सार्थ था क्योंकि उसके द्वारा वे भारत केसरी को जगा ही तो रहे थे।

इसी जनजागृति के लिये उन्होंने दो सार्वजनिक उत्सव प्रारम्भ किये। एक गणेशोत्सव और दूसरा शिवाजी उत्सव। गणेश या गणपति अखिल हिन्दू मात्र के लिये प्रथम दैवत के रूप में आराध्य हैं । घर घर में उनकी पूजा होती ही है। शिवाजी जब बचपन में पहली पहली बार पुणे आये तो सबसे पहले उन्होंने एक गणेश मूर्ति की ही स्थापना की थी। पेशवाओं के तो वे कुलदेवता ही थे। लेकिन तिलक ने सार्वजनिक रूप से गणेश उत्सव मनाना प्रारम्भ किया। उस बहाने दस दिनों तक रोज लोग एक स्थान पर एकत्रित होते थे। उनके एकत्रित होने के लिये संगीत, नाटक, कीर्तन आदि मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे जाते थे। उन्हीं के बीच नेताओं और विविध विषयों के विद्वानों के व्याख्यान भी आयोजित किये जाते थे। इस प्रकार धार्मिक कार्यक्रम के आवरण के पीछे राष्ट्रीय जन जागृति का कार्यक्रम चलने लगा। शिवाजी उत्सव इसी प्रकार का दूसरा आयोजन था। परन्तु इसकी पृष्ठभूमि धार्मिक न होकर पूर्ण रूप से राष्ट्रीय थी। शिवाजी प्रतीक थे राष्ट्रीय अस्मिता के। उन्होंने तीन तीन शक्तिशाली शाहियों से टक्कर लेकर शून्य में से स्वराज्य निर्माण किया था। उन्हीं के हम वंशज हैं तो हम भी जिनके राज्य में सूर्यास्त नहीं होता ऐसे अंग्रेजों को परास्त कर अपना स्वराज्य क्यों नहीं पा सकते यह प्रश्न पूछने वाला और निश्चित रूप से पा ही सकते हैं ऐसा उत्तर देने वाला यह उत्सव था। तिलक ने जन जागृति के ऐसे जो विविध उपक्रम प्रारम्भ किये उनके कारण उस काल के लोगों के बीच वे भगवान् तिलक कहे जाने लगे थे।

उस समय भारतीय राजनीति में दो दल बन गये थे जिन्हें जनसामान्य नरम दल और गरम दल के नाम से अधिक जानते हैं। नरम दल वाले सरकार से किसी प्रकार का संघर्ष नहीं चाहते थे। वे अपनी माँगें चर्चा के माध्यम से मनवाने में विश्वास रखते थे। इसके विपरीत गरम दल के लोग चर्चा से हुआ तो ठीक पर अगर नहीं हुआ तो संघर्ष का मार्ग भी अपनाने से नहीं हिचकते थे। फिरोजशाह मेहता, श्रीनिवास शास्त्री, गोपाल कृष्ण गोखले आदि नरम दल के प्रमुख नेता थे और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिनचंद्र पाल, अरविन्द घोष आदि गरम दल के थे। महामना मदन मोहन मालवीय जैसे भी कुछ नेता थे जो दोनों विचारधाराओं में समन्वय और सामंजस्य चाहते थे। सूरत कॉंग्रेस के अधिवेशन में इन दोनों गुटों के बीच संघर्ष हुआ और कांग्रेस दो फाड़ हो गई। गरम दल वाले कॉंग्रेस से निकाल दिये गये। तिलक जब छः वर्ष के लिये मंडाले जेल में डाल दिये गये तब भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन पर राख जम गई।

नरम दल वाले तो एकदम निष्क्रिय थे ही।गरम दल भी नाविक विहीन नाव की भाँति भटक गया था। सब तिलक के छूट कर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सन् 1914 में जब तिलक छूटे तब सबकी नज़र थी कि वे अब क्या करेंगे। कॉंग्रेस का रास्ता तो उनके और गरम दल वालों के लिये बंद था क्योंकि नरम दल वालों ने एक प्रतिज्ञा पत्र बना रखा था जिस पर हस्ताक्षर किये बिना कोई कॉंग्रेस में प्रवेश नहीं कर सकता था। उस प्रतिज्ञा पत्र में लिख कर देना होता था कि मैं सरकार के विरुद्ध न कुछ बोलूँगा, न कुछ करूँगा। गरम दल वाले यह कैसे मान सकते थे। इसलिये सबका मत था कि नया दल बनाया जाय। लेकिन तिलक ने शिवाजी को बहुत अच्छी तरह पढ़ा था। उन्होंने निर्णय किया हम प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे और कॉंग्रेस में जायेंगे।तिलक के अनुयायियों को उनके इस निर्णय से धक्का लगा। लेकिन तिलक ने उन्हें समझाया कि एक बार कॉंग्रेस में घुस जाँय। फिर वहाँ अपना बहुमत बनायेंगे और फिर इस नियम को बदल देंगे। सन् 1916 का लखनऊ अधिवेशन पूरी तरह तिलक का हो गया। अधिवेशन में युवकों ने तिलक की इतनी भव्य, उत्साहपूर्ण शोभायात्रा निकाली जिसके सामने अधिवेशन के नियोजित अध्यक्ष की भी फीकी पड़ गई।

वह प्रथम विश्व युद्ध का समय था। तिलक ने भारतीय युवकों को बहुत बड़ी संख्या में सेना में भर्ती होने का सन्देश देकर सबको चकित कर दिया। लेकिन तिलक की अद्भुत दूरदृष्टि थी। उन्होंने कहा कि आज नहीं तो कल भारत स्वतंत्र होगा ही। तब हमें एक उत्तम प्रशिक्षित सेना चाहिये। इसलिये भारतीय युवकों को सेना में, प्रशासन में, वैज्ञानिक क्षेत्र में, शिक्षा में, आर्थिक क्षेत्र में, हर जगह जाना चाहिए। उनका युवकों के लिये कहना था कि अंग्रेजों की नौकरी बेझिझक करो पर मन में देशभक्ति की लौ को जागृत रखो।

तिलक श्रीमद्भगवद्गीता के बहुत बड़े अध्येता थे। गीता में श्रीकृष्ण ने जिस निष्काम कर्मयोग का उपदेश दिया है तिलक ने सारे जीवन में उसीका अनुपालन किया। गीता के तत्व को सभी को समझाने के लिये ही उन्होंने गीतारहस्य नामक महान् ग्रंथ की रचना की। अत्यन्त व्यस्त राजनीतिक जीवन होने के कारण ऐसा ग्रंथ लिखने के लिये उन्हें समय नहीं मिल सकता था। हमें आभारी होना चाहिये अंग्रेज़ी सरकार का जिसने उन्हें मंडाले की जेल में रखा और हम यह अनुपम ग्रंथ पा सके। वास्तव में तिलक के अन्दर के विद्वान के प्रकट होने के लिये कारावास अत्यन्त आवश्यक था। इसके पूर्व जब वे पहली बार 1897 से 1899 तक कारावास में थे तब उन्होंने 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' शीर्षक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने वेद की ऋचाओं में आये हुए नक्षत्रों की गति से सम्बन्धित उल्लेखों के आधार पर सिद्ध किया था कि उन ऋचाओं के रचयिता निश्चित रूप से उत्तरी ध्रुव क्षेत्र में रहे होंगे। तिलक की वह पुस्तक एक श्रेष्ठ शोध कार्य प्रदर्शित करती है जिसमें उनका संस्कृत तथा ज्योतिर्गणित का गहन अध्ययन तथा ज्ञान परिलक्षित होता है।

1 अगस्त सन् 1920 को तिलक ने इस नश्वर संसार से बिदा ली। लेकिन जाने से पहले वे एक ऐसी चेतना जगा चुके थे जिसके कारण अगले केवल 27 वर्षों में भारतीय अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर सके।

‘मेरा प्यारा हिंदुस्तान’

लोकतंत्र दुनिया का वृहतर,
करते सब तुझ पर अभिमान!
मेरा प्यारा हिंदुस्तान, नमन नमन
ऐ हिंदुस्तान!

चरण पखारें तेरे सागर ,
तेरा प्रहरी हिम का आगर ,
वेद, पुराण, ज्ञान की गागर,
रास रचाते हैं नटनागर ,
कला के सँग बढता विज्ञान!
मेरा प्यारा हिंदुस्तान, नमन नमन
ऐ हिंदुस्तान!

शांतिदूत धरणी का तू है,
गंग -यमुन का संगम तू है,
नव प्रभात की नई किरण है,
बौद्ध भिक्षु को मिले शरण है ,
अतिथि होता है भगवान !
मेरा प्यारा हिंदुस्तान, नमन नमन
ऐ हिंदुस्तान!

क्षमा, दया, तप, त्याग मनोबल,
हिंदुस्तानी का है सम्बल ,
ऋषि, मुनियों का यहाँ है मेला,
सारा विश्व बना है चेला ,
सब करते हैं पूजा, ध्यान !
मेरा प्यारा हिंदुस्तान, नमन नमन
ऐ हिंदुस्तान!

राष्ट्र गान का मान हैं करते,
संविधान का ध्यान हैं रखते,
विश्व बंधुत्व हमारा नारा,
ऊंचा रहे तिरंगा प्यारा ,
तुझ पर मेरी जां कुर्बान !
मेरा प्यारा हिंदुस्तान, नमन नमन
ऐ हिंदुस्तान!

मंजु श्रीवास्तव ‘मन’
वर्जीनिया, अमेरिका

मातृभूमि तुझे नमन

''एक गीत''

हे ! मातृभूमि तुझे नमन
हे! देश मेरे तुझे नमन,
माँ! भारती तुझे नमन
तुझे नमन - तुझे नमन
हे! मातृभूमि तुझे नमन ।

2

फहरे तिरंगा सबसे ऊंचा
जय- जय शुभ्र हिमाचल श्रृंगा,
गंगा जमन की तहज़ीब ऊंची
गुलशन नुमा महका वतन
तुझे नमन-- तुझे नमन
हे! मातृभूमि तुझे नमन

3

अब ना रहेगा तम कहीं
अब ना रहेगा ग़म कहीं,
चलेंगे साथ सब मिलकर
बढ़ के छू लेंगे गगन ,
तुझे नमन-- तुझे नमन

4

ललकार दें दुश्मन को हम
चट्टान से वीरों के प्रण,
लुटा दें जान सब इस पर
मेरा वतन- ये- मेरा वतन
तुझे नमन- तुझे नमन

हे! मातृभूमि तुझे नमन

सुधा झलानी
नासिक

लेख- जाति है कि आख़िर जाती क्यों नहीं?

सोनम लववंशी

देश की राजनीति में जातिवाद का जहर किसी से छिपा नही है। लेकिन जब यही जातिवाद का जहर खेलों और खिलाड़ियों के लिए भी शुरू हो जाए तो कई सवाल खड़े होते हैं। जब भी खिलाड़ी अपने बेहतर खेल प्रदर्शन से देश का मान बढ़ाते हैं। फ़िर लोग उनके खेल प्रदर्शन की चर्चा न करके उनकी जातियां जानने में दिलचस्पी लेते है। सोचिए यह कितने दुर्भाग्य की बात है। जब खिलाड़ी आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहे होते है तब कोई उनकी जाति नहीं पूछता। उनका मज़हब नहीं जानना चाहता और न ही कोई दल उनकी सुध लेता है, लेकिन जैसे ही कोई खिलाड़ी पदक जीतता है। फ़िर खिलाड़ी को जाति-धर्म के साँचे में बंटाने की फ़ितरत जन्म ले लेती है। अब जरा सोचिए कि क्या हमारा देश ऐसे ही विश्वगुरू बनेगा? क्या जातियों में बांटकर हम खेलों में शीर्ष पर पहुँच पाएंगे? आख़िर यह जाति है कि जाती क्यों नहीं? वैसे तो हम नारा बुलंद करते हैं संप्रभु भारत का। फ़िर आख़िर बीच में जाति-धर्म और राज्य कहाँ से आ जाता है? चक दे इंडिया एक फ़िल्म आई थी। जिसमें एक खूबसूरत डायलॉग है कि, ' मुझे स्टेट के नाम न सुनाई देते हैं, न दिखाई देते हैं। सिर्फ़ एक मुल्क का नाम सुनाई देता है-

इंडिया।' फ़िर सवाल यहीं कैप्टन अमरिंदर सिंह जैसा नेता कैसे खिलाड़ियों को राज्यों में बांट सकते है? ऐसे नेताओं से सिर्फ़ यही सवाल है कि क्या इन खिलाड़ियों की विदेशों में पहचान उनके राज्य से होती है नहीं न। फ़िर ऐसी औछी मानसकिता क्यों?

खिलाड़ी हमारे राष्ट्र का गौरव है, पर दुर्भाग्य देखिए कि आज उन्हें भी जाति धर्म मे बांटने की औछी राजनीति की जा रही है। हाल के कुछ सालों में सियासत ने खेलों में भी जातियों की घुसपैठ करा दी है जो कि बेहद ही खत़रनाक है। खेलों को जातियों के चश्मे से देखने की कोशिश देश में की जाने लगी है। जिन खिलाड़ियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए। आर्थिक, मानसिक तौर पर सहायता की जाना चाहिए तब कोई सरकार या कोई जाति धर्म वर्ग विशेष के लोग आगे आकर सहायता भले न करे। लेकिन जब वही खिलाड़ी कोई मेडल जीत ले तो लोगों को उन खिलाड़ियों में जाति धर्म नजर आने लगता है। बात चाहे हिमादास की हो या फिर दीपिका कुमारी या पीवी सिंधू की। इन सभी खिलाड़ियों ने अपने बेहतर खेल प्रदर्शन से देश का मान सम्मान बढ़ाया। लेकिन दुर्भाग्य देखिए हमारे अपने देश के लोगों को इनके खेल से ज्यादा इनकी जाति जानने में दिलचस्पी है। पीवी सिंधू ने हाल ही में ओलंपिक में कांस्य पदक जीत कर देश को गौरवांवित किया। लोगो को उनकी मेहनत, उनका समर्पण नही नजऱ आया बल्कि लोग यह जानने में लगे है कि वह किस जाति से है। हाल ही में गूगल द्वारा जारी किए गए डेटा से पता

चला है कि लोग पीवी सिंधू के खेल से कही ज्यादा उनकी जाति सर्च करने में लगे हुए हैं। यह किसी एक खिलाड़ी के साथ नहीं हुआ है। जब दीपिका कुमारी ने तीरंदाज़ी में बेहतरीन प्रदर्शन किया और कई स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीता। उनकी जीत के बाद दीपिका की जाति को लेकर भी सोशल मीडिया में जिस तरह के पोस्ट आए वह भी शर्मसार करने वाले थे। देश में बहस छिड़ गई थी। हर किसी को उन्हें अपनी जाति का बताने की होड़ लगी थी। किसी ने उनके नाम के साथ 'महतो' जोड़ा तो किसी ने 'मल्लाह'। क्या खिलाड़ियों का महिमामंडन इस तरह से किया जाना सही है। यह सवाल व्यक्ति को स्वयं पूछना चाहिए। खिलाड़ी सिर्फ खिलाड़ी होता है वह अपनी मेहनत, अपने खेल के दम पर देश का मान बढ़ाता है। क्या खिलाड़ियों की कोई जाति होती है। हमारे लिए तो देश का गौरव बढ़ाने वाले हर खिलाड़ी जाति-धर्म से ऊपर होता है। फिर क्यों इस तरह की औछी राजनीति का विष खेलों में घोला जा रहा है। खिलाडियों को खिलाड़ी ही रहने दिया जाए, वरना जाति और धर्म के बंधन में बंधकर तो देश का विकास अवरुद्ध हो गया, फ़िर खेल का विकास क्या हो पाएगा?

बात भारतीय एथलीट हिमा दास की ही करे। तो अंडर-20 विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीतने के बाद हिमा दास चर्चा में थी और चर्चा भी इस बात को लेकर की वह किस जाति से आती है। हमारे ही देश का एक बड़ा तबका उनकी जाति जानने में लगा हुआ था। गूगल पर उनका नाम लिखने मात्र से ही सबसे पहला सुझाव उनकी जाति के बारे में ही आता था। कभी किसी ने यह जानने की कोशिश भले न कि हो कि वह किन अभावों में बड़ी हुई। उन्होंने यह मुकाम कैसे हासिल किया। लेकिन उनकी जाति उनके खेल से भी ऊपर हो गई। यह खब़र भले सोशल मीडिया पर आलोचना का विषय बनी थी। लेकिन इन खबरों ने हमे आइना जरूर दिखा दिया था कि किस तरह हम 21वीं सदी में भी जातियों में जकड़े हुए है। सभी को अपने धर्म का सम्मान करना चाहिए। लेकिन किसी की जाति पर सिर्फ इसलिए चर्चा करना कि वह किस धर्म किस वर्ग से आती है यह निंदनीय है। हिमा दास की जाति में रुचि दिखाने वालों ने बता दिया है कि भारत

आज भी जातिवाद के फेर में फंसा हुआ है। वैसे हमारे देश की राजनीति धर्म के आधार पर ही चल रही है। हालांकि यह बहस का विषय है कि हिमा या पीवी सिंधु जैसे कामयाब लोगों की जाति के बारे में लोगो की दिलचस्पी लेना सही है या गलत।

यह तो हम सभी को मालूम है कि हमारा भारतीय समाज जातियों में विभाजित है। हर समाज के व्यक्ति को उसका हिस्सा होने पर गर्व होना चाहिए। यदि किसी समाज विशेष का व्यक्ति कोई उपलब्धि हासिल करता है तो समाज को उस पर गर्व होना स्वभाविक है। लेकिन वह समाज तब कहा होता है जब वह व्यक्ति संघर्ष के दौर से गुजर रहा होता है। वैसे इस बात में कोई दोराय नही है कि व्यक्ति के सफल होने पर लोगो की लम्बी कतार लग जाती है। लाखो हमदर्द बनकर आ जाते है लेकिन जब वह व्यक्ति अपनी ज़िंदगी के खराब दौर से गुजर रहा होता है तो अपने भी आंख मूंद लेते है। खैर इंसान की फितरत ही यही है। वैसे भी आज धर्म की परिभाषा भी अपने मतलब के अनुरूप बदल दी गई है। आज के दौर में धर्म के ठेकेदार सोशल मीडिया पर धर्म और संप्रदाय के अपने-अपने प्रोफ़ाइल चला रहे हैं। लाखों लोग उन्हें फ़ॉलो कर रहे हैं। लोगो का मानना है कि धर्म या जाति विशेष का होना गर्व की बात है तो इसमें क्या बुराई है कि लोग कामयाब लोगो को जाति के आधार पर विभाजित करें।

गौरतलब हो कि जब भी कोई खिलाड़ी पदक जीतता है तो वह सिर्फ एक मैडल भर नहीं होता है बल्कि उस मैडल के पीछे उस खिलाड़ी के संघर्ष और वर्षों की तपस्या होती है। कैसे एक खिलाड़ी अपने खेल के लिए कड़ा परिश्रम करता है। बात चाहे फिर मीरा दास चानू की ही क्यों न हो या फिर किसी अन्य की ...! इन खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत बताती है कि कैसे इनके राह में लाख कठिनाईयों के बावजूद भी ये अपनी मंजिल को पाने के लिए जुनूनी थे। क्या इनके संघर्षों की कहानी से प्रेरित होकर देश के युवाओं को खेल के प्रति जागृति करने से जरूरी कुछ और हो सकता है भला? वैसे इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य भला क्या हो सकता है कि जब तक कोई खिलाड़ी अपने बेहतर खेल प्रदर्शन से देश की झोली में कोई मैडल न डाल दे तब तक देश उसे जानता तक नहीं है।

हमारे देश में ऊंची जाति, नीची जाति, अमीर-गरीब, छोटे-बड़े और स्त्री-पुरुष बल्कि यह कहे कि हर जगह भेदभाव की कभी न मिटने वाली लकीर खींच दी गई है। इसकी जड़ें वर्तमान दौर में और गहरी होती जा रही है। तमाम राजनैतिक दल अपने अपने राजनैतिक लाभ के लिए जातिवाद को बढ़ावा दे रहे है। हमारे संविधान-प्रदत्त अधिकार और कानूनी प्रावधान भी जातीय भेदभाव, उत्पीड़न और अन्याय को खत्म करने में बहुत सफल नही हो रहे है क्योंकि देश की राजनीति को संचालित करने वाली शक्तियां ही नहीं चाहती कि देश से जातिवाद खत्म हो और इससे भी बड़ी विडंबना तो तब हो जाती है। जब एक पढ़ी-लिखी एंकर मंत्री जी से सवाल पूछते वक्त यह कह देती है कि आपके मंत्री बनने पर तो पदक की बौछार हो रही। अब समझिए कि देश किस तरफ़ बढ़ रहा है और खेल भावना कहाँ पीछे छूटती जा रही है। आज शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति राजनीति, खेल ऐसा कोई क्षेत्र नही बचा। जहां भेदभाव न होता हो। खेल हो या फ़िल्म जगत कही जातिवाद है तो कही परिवार वाद। भारत में ये कह देना कि जातीय भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है, महज एक जुमला भर हो सकती है या किसी राजनीतिक पार्टी का आकर्षक नारा, लेकिन ऐसा वास्तव में सम्भव हो पाए यह कहना बहुत दूर की कौड़ी है और जब तक यह विकसित नहीं होगा न देश के भीतर खेल संस्कृति पनपेगी और न ही राष्ट्र उत्थान कर सकता है। यह लिखकर रख लीजिए।

मुकुल रॉय के भ्रामक बयान

मुकुल रॉय भले ही भाजपा से तृणमूल कांग्रेस में चले गए हो लेकिन अब भी उनके जुबान पर भाजपा का नाम आ ही जाता है। इसी कड़ी में जब मुकुल राय लोगों के बीच जाते हैं तो कभी खुद को भाजपा का बता देते हैं तो कभी तृणमूल कांग्रेस का। फिलहाल वह विधायक के तौर पर भाजपा के हैं। बंगाल विधानसभा के लोक लेखा समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्हें भाजपा द्वारा ही नामित किया गया है।

हाल में ही त्रिपुरा में तृणमूल प्रतिनिधियों पर हमले को लेकर मुकुल रॉय ने भाजपा पर निशाना साधा था और उम्मीद जताई थी कि अगले चुनाव में वहां टीएमसी अच्छा प्रदर्शन करेगी। विधानसभा उपचुनाव को लेकर मुकुल रॉय यह कह रहे हैं कि अगर वह भाजपा

से खड़े होते हैं तो जीत जाएंगे। लेकिन अगर तृणमूल से खड़े होंगे तो लोग तय करेंगे कि वे जीतेंगे या नहीं जीतेंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो मुकुल रॉय खुद को अब भी भाजपा का बताने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। लेकिन जब बात त्रिपुरा की हो रही है तो वह खुद को तृणमूल का नेता बता रहे हैं।

आपको बता दें कि मुकुल रॉय कृष्णा नगर उत्तर सीट से भाजपा के टिकट पर विधानसभा का चुनाव जीतकर विधायक बने थे। हाल में ही उपचुनाव को लेकर पूछे गए प्रश्न में मुकुल रॉय ने यह तक कह दिया था कि उपचुनाव में यहां भाजपा जीतेगी। हालांकि खुद को संभालते हुए उन्होंने बाद में कहा कि यहां टीएमसी जीतेगी। मुकुल रॉय ने 11 जून को भाजपा छोड़ दी थी और तृणमूल में लौट गए थे। दल बदल कानून के तहत मुकुल रॉय को भाजपा ने विधायक पद से बर्खास्त करने की मांग की है। फिलहाल मुकुल लोक लेखा समिति के अध्यक्ष बने हुए हैं। उनके भ्रामक बयानों के चलते भाजपा ने मुकुल को दलबदल कानून के तहत विधानसभा सदस्य से अयोग्य करार देने और लोक लेखा समिति के अध्यक्ष पद से हटाने की मांग की है।

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

प्रमोद कुमार राय उर्फ पंकज राय

ग्राम रेवसा सैयद राजा

चन्दौली

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

शिवेनन्द पाण्डेय

किसान मोर्चा भाजपा नेता

चंदौली

रक्षाबंधन विशेष लघुकथा :

दीये की तलाश

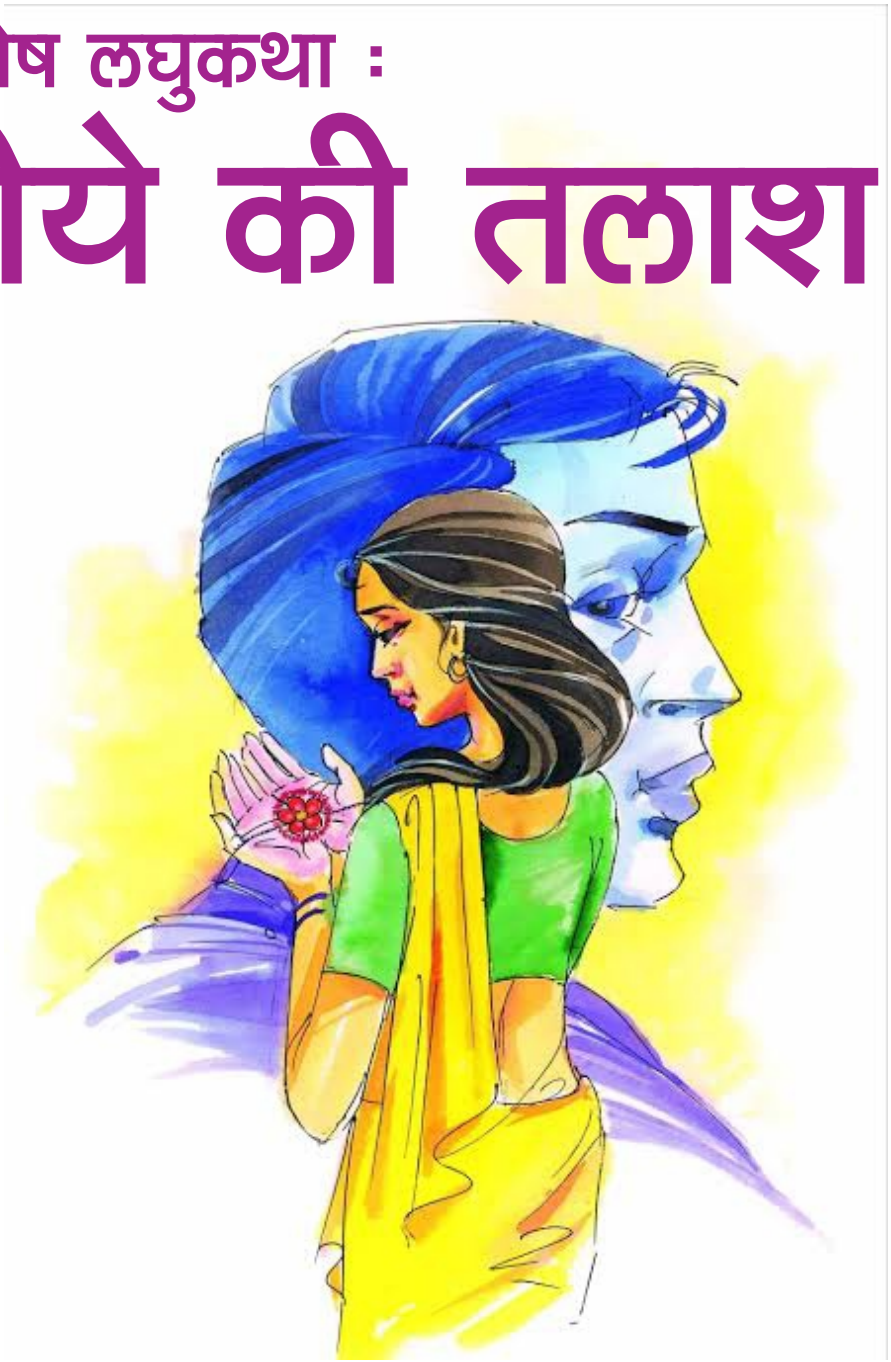

आरती रॉय
दरभंगा, बिहार

पहले जरा सी खरोंच लगने पर भी माँ पापा जमीन आसमान एक कर देते थे , आज उन्हीं की आँखों का किरकिरी बन गया हूँ । दोष किसे दूँ ? हालात को या किस्मत को ?

नहीं नहीं ! किस्मत कर्म के बल पर बदला भी जा सकता है । गलती तो मुझसे भी हुई है ,माँ की आँखों का तारा पापा के बुढ़ापे का सहारा , बहनों के लिये एक टिमटिमाता दीया ही सही, हूँ तो दीपक मुझे फिर से अपने अंदर हिम्मत जगानी होगी ।

नौकरी एवं प्रतियोगी परीक्षा में बैठने उम्र सीमा समाप्त हो गई है, फिर कैसे स्वयं को झूठे सपने झूठे आश्वासन से बहलाऊँ ?

दोनों बहनों के ब्याह की चिंता ऊपर से नकारा पुत्र के बेरोजगारी की चिंता । बुढ़े माता-पिता की झोली में परेशानियों के सिवा आज तक कुछ नहीं डाल पाया हूँ ।

नहीं...नहीं अब और नहीं, कम से कम मैं तो बोझमुक्त कर ही सकता हूँ ! और मन में मरने का ख्याल लिए.. हाँ ...हाँ...अब इसके सिवा सारे रास्ते बंद हो गए हैं ।

काली अंधियारी रात की परवाह किये बिना वह भागते-भागते बट-वृक्ष की डालियों में मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ने लगा ।

तभी पीछे से प्यारी आवाज़ गूंजी -

'भैया ! रक्षाबंधन के वादे आप शायद भूल गये हैं, पर मुझे याद है । आप हताश एवं निराश हो जिस जघन्यतम अपराध को करने जा रहे हैं , उसकी साक्षी आपके पीछे मैं भी नहीं रहूँगी , सोच लो ।'

बहन की स्पर्श में एक ममतामयी माँ की छवि दिखाई देने लगी, वह कुछ बोल रही थी--

'पापा के बुढ़ापे की लाठी क्या इतनी कमजोर है ?'

'नहींईईईष्ठ.कल से इसी बरगद की छाँव में किसान हाट लगाऊँगा । सहकर्मियों की तलाश से सहकारिता संभव है । ■ ■

सबसे पहले यह अच्छे से जान-समझ लो कि हर बात के पीछे एक मतलब होता है। इस दुनिया की हर चीज बहुत अच्छी है, पवित्र और सुंदर है। अगर आपको कुछ बुरा दिखाई देता है तो इसका मतलब यह नहीं कि वो बुरा है। इसका मतलब यह है कि आपने उसे सही रोशनी में नहीं देखा।

स्वामी विवेकानंद

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

राम मनोहर राम

प्रधान ग्राम रेवसा

कर्मठ और जुझारू

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

विकास कुमार सिंह

सभासद

नगरपालिका परिषद

पं दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद चन्दौली

मैं भारत हूँ

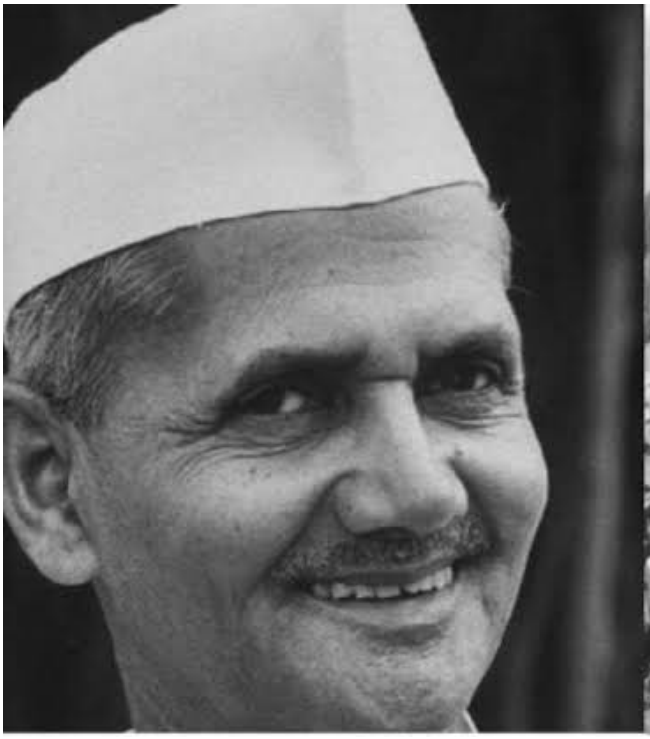

सागर मेरे पग धोता है ,
नगपति भी ताज सँजोता है ।
प्राचीन सभ्यता का रथ हूँ ,
मैं भारत हूँ मैं भारत हूँ।

मैं विश्व गुरु कहलाता था ,
खुद वैभव पर इठलाता था ।
आलस्य कोप ने घेर लिया ,
सारे वैभव को ढेर किया ।।

फिर गौतम आकर बुद्ध हुआ ,
थोड़ा मन मेरा शुद्ध हुआ ।

तब सत्य अहिंसा नारों में ,
लग गयी जंग तलवारों में ।।

मंगोल हूण अफगानों ने ,
मुगलों ने और पठानों ने ।
वर्षों कमजोर किया मुझ को ,
जी भर के लूट लिया मुझ को ।।

दासत्व भार को ढो ढो कर ,
शदियों खायीं मैंने ठोकर ।
विष बीज गये गौरे बोकर ,
आज़ाद हुआ खंडित होकर ।।

जसवीर सिंह हलधर
देहरादून।

नेताजी को मैं भूल गया ,
गाँधी की गोदी झूल गया ।
बापू भी स्वर्ग सिधार गये ,
खुद के कर्मों से हार गये ।।

राजाओं के रुख मोड़ मोड़,
छोटे राज्यों को जोड़ जोड़ ।
ये लोह पुरुष ने काम किया ,
सुगठित स्वरूप अंजाम दिया ।।

बाबा की मेहनत संविधान ,
यह ग्रंथ आज गीता समान ।
लेकिन कश्मीरी अकड़ गये ,
जिन्ना झांसों में जकड़ गये ।।

कबायली हमला बोल दिया ,
केसर घाटी विष घोल दिया ।
तब राज हरि सिंह दिखा विकल ,
पकड़ा मेरा ही तब आँचल ।।

मेरी सेना ने दिया दखल ,
पाकिस्तानी प्रयास विफल ।
नेहरू अब्दुल्ला की जोड़ी ,
फिर खेल गयी उल्टी कोड़ी ।।

तब दफा तीन सत्तर जोड़ी ,
किस्मत कश्यप कुल की फोड़ी ।
यह सारे धक्के खा खा कर ,
आया फिर मेरा रूप निखर ।।

मैं फिर से प्रजा तंत्र बना ,
माओ से नेहरू बैर ठना ।
नेहरू ये समझ नहीं पाया ,
मेनन ने ऐसा बहकाया ।।

झाओ ने हमला बोल दिया ,
तोपों का मुँह यूँ खोल दिया ।
नेहरू की नहीं तैयारी थी ,
हथियारों की लाचारी थी ।।

सीमित साधन हथियारों से ,
सैनिक खेले अंगारों से ।
सेना मेरी तब खूब लड़ी ,
वीरों की गाथा भरी पड़ी ।।

यह पीड़ादायक झटका था ,
नेहरू मन विचलित भटका था ।
नेहरू यह झेल नहीं पाये ,
हुए उदासीन से मुरझाये ।।

ऐसा यह वज्रा प्रपात हुआ ,
नेहरू को हृदय आघात हुआ ।
अक्सआई पहले हार गये ,
अब नेहरू स्वर्ग सिधार गये ।।

तब शास्त्री जी ने ली कमान ,
अपनी रक्षा का किया ध्यान ।
सेना को दे साजो सामान ,
आया नारा हो जय जवान ।
कर हरित क्रांति का प्रावधान ,
दूजा नारा था जय किसान ।।

पैंसठ में पाक नहीं माना ,
उसने भी चाहा धमकाना ।
शास्त्री ने उसको जता दिया ,
लाहौर तिरंगा लगा दिया ।।

आखिर में युद्ध विराम हुआ ,
मेरा दुनिया में नाम हुआ ।
षड़तंत्र हुआ लेकिन भारी ,
शास्त्री को खाय गयी यारी ।।

दोबारा सम्मुख आऊँगा ,
अगला अध्याय सुनाऊँगा ।
हलधर' कहलाया जाता हूँ ,
भारत की कथा सुनाता हूँ ।।

चारों ओर बस प्रेम ही प्रेम है। प्यार फैलाव है, तो स्वार्थ सिकुड़न है। अतः दुनिया का बस एक ही नियम होना चाहिए, प्रेम... प्रेम... प्रेम...! जो प्रेम करता है, प्रेम से रहता है, वही सही मायने में जीता है। जो स्वार्थ में जीता है, वो मर रहा है इसलिए प्यार पाने के लिए प्यार करो, क्योंकि यही जिंदगी का नियम है।

स्वामी विवेकानंद

बहने ऐसी होती हैं।

भाई की लंबी उम्र की दुआएं मांग लेती हैं।
हो दुख में भाई तो हर बला उतार देती हैं।
बहनें ऐसी होती हैं।
बचपन से ही प्यार और त्याग की मूरत होती हैं।
हाथ पर राखी बाँध के दिल से प्यार जताती हैं।
बहनें ऐसी होती है।
सूने माथे को रोली तिलक से सँवारती हैं।
नजर लगें न कभी इसलिए नज़र उतारती हैं।
बहनें ऐसी होती हैं।
जब भाई दूल्हा बनता है तो
घोड़ी के पीछे पीछे राई नमक उसारतीं है।
हाथ में गहनों के साथ कुल्हड़ भी रख लेती है।
बहनें ऐसी होती है।
हो शरद की उज्जवल रात या
फिर हो भाई दूज का प्रभात
भूखी रह कर हँसती हुई आतीं है।
होती है खुशी घर में जब
बहनें खिल - खिलातीं हैं।
कच्चे धागों से प्रेम जताती हैं।
हल्दी से माए पोरी वो सजाती हैं।
दोगे क्या तुम उन को जो ,खुद
अपना सब छोड़ कर चली जाती हैं।
हो ससुराल में चाहे कुछ भी
पीहर में नही बताती हैं।
रहती सदा परायी बन कर
पर पीहर की खुशियां पहले मांगतीं हैं।
आये जब नव वधु घर पर तो
बहनें अर्घ्य बढ़ाती हैं।
जब बैठो तुम हवन पूजा में गांठ बाँध
वो पूजा सफल बनाती हैं।
नजर लगें न किसी की तुम को।
ले कर आरती उतारती हैं।
बहनें ऐसी होती है।
हो जब विदाई इन की या
फिर हो गौद भराई ही,
ससुराल से आज्ञा ले कर
मायके की देहरी पूजने आती हैं।
बहनें ऐसी होती है।
रश्मों ,रिवाजों को मनाती हैं।
हो ग्रह प्रवेश या हो बेटे की शादी,
बहन पहनती है भाई की दी हुई साड़ी।।
बहनें ऐसी होती है।
जब मौत बहन की होती है
तो भी वो भाई की ही साड़ी पहन
ससुराल से विदा हो पाती हैं।

बहनें ऐसी होती है।

संध्या चतुर्वेदी
मथुरा, उप

जन्माष्टमी

अंकुर सिंह
चंदवक जौनपुर

भादो मास के अष्टमी,
कृष्ण लिए अवतार।
पुत्र मैया देवकी का,
बना सबका तारणहार।।

मथुरा के कारागार में जन्मे,
बाल-लीला किए गोकुल में।।
यमुना किनारे खेले-खाले
शिक्षा लिए गुरुकुल में।।

गोकुल में चोरी - चोरी,
माखन चुरा खूब खाते थे।
मित्र-मंडली और यारो संग,
कृष्ण गईया चराने जाते थे।।

हाथो में होती इनके मुरली,
मुकुट की शोभा बढ़ाता मोर।
यशोदा मैया का ये लाडला,
कहलाता आज भी माखन चोर।।

हे केशव, हे माधव, सुनो हे गोपाल,
इस जीवन में पीड़ा मुझे है अपरम्पार ।
मुरली वाले प्रभु, मुरली बजाकर ,
कर दो मेरी नैया को तुम पार।।

आज पर्व है प्रभु जमाष्टमी का,
कर दो मुझपर इतना उपकार।
हर पल, हर क्षण हम भक्ति करे,
और तुम करो मेरे जीवन का उद्धार।।

जन्माष्टमी विशेष : जानकारियां

नीरज त्यागी
गाजियाबाद

भगवान श्री कृष्ण के बारे में अहम जानकारियां -

चातुर्मास भगवान विष्णु और उनके अवतारों की पूजापाठ से जुड़ी अवधि होती है। इस क्रम में सबसे पहले नंबर आता है कृष्ण जन्माष्टमी का। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान कृष्ण का जन्म भाद्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ था। इस शुभ तिथि को भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है और इसे जन्माष्टमी कहा जाता है। भगवान कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में इस त्योहार की विशेष धूम रहती है और इसी के साथ पूरे बृज क्षेत्र में जन्माष्टमी का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। देश भर के सभी कृष्ण मंदिरों में जन्माष्टमी विशेष धूमधाम के साथ मनाई जाती है। इस साल जन्माष्टमी 30 अगस्त दिन सोमवार को मनाई जाएगी। इस अवसर पर लोग घरों में और मंदिरों में झांकियां सजाते हैं। घर में बाल गोपाल का जन्मोत्सव मनाते हैं। मान्यता है कि जो निःसंतान दंपती जन्माष्टमी का व्रत रखते हैं, भगवान उनकी मनोकामना जल्द पूरी करते हैं।

भगवान श्री कृष्ण को अलग अलग

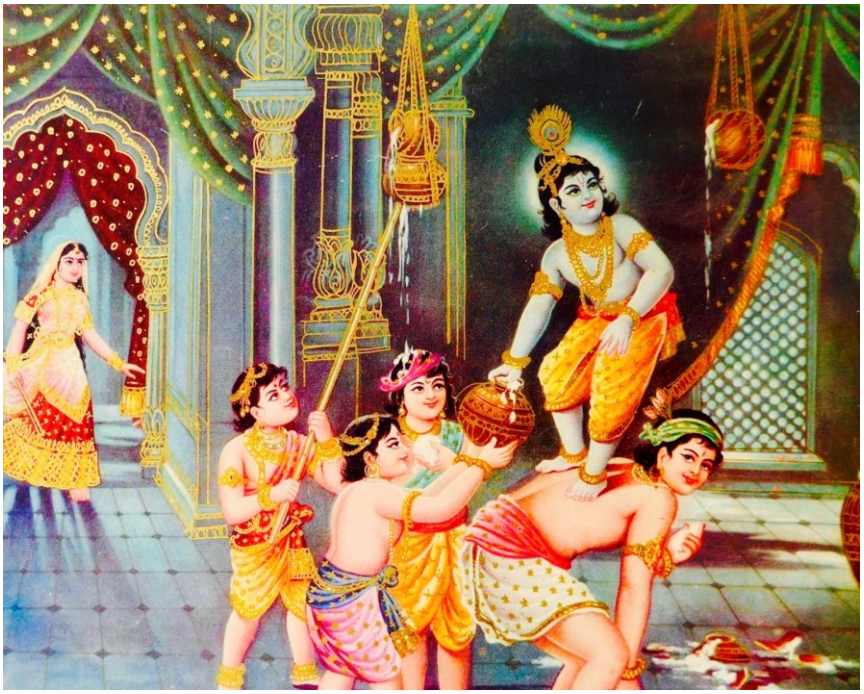

स्थानों में अलग अलग नामो से जाना जाता है।

उत्तर प्रदेश में कृष्ण या गोपाल गोविन्द इत्यादि नामों से जानते है।

राजस्थान में श्रीनाथजी या ठाकुरजी के नाम से जानते है।

महाराष्ट्र में बिट्ठल के नाम से भगवान् जाने जाते है।

उड़ीसा में जगन्नाथ के नाम से जाने जाते है।

बंगाल में गोपालजी के नाम से जाने जाते है।

दक्षिण भारत में वेंकटेश या गोविंदा के नाम से जाने जाते है।

गुजरात में द्वारिकाधीश के नाम से जाने जाते है।

असम ,त्रिपुरा,नेपाल इत्यादि पूर्वोत्तर क्षेत्रो में कृष्ण नाम से ही पूजा होती है।

मलेशिया, इंडोनेशिया, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस इत्यादि देशो में कृष्ण नाम ही विख्यात है।

गोविन्द या गोपाल में 'गो' शब्द का अर्थ गाय एवं इन्द्रियों , दोनों से है। गो एक संस्कृत शब्द है और ऋग्वेद में गो का अर्थ होता है मनुष्य की इंद्रिया...जो इन्द्रियों का विजेता हो जिसके वश में इंद्रिया हो वही गोविंद है गोपाल है।

श्री कृष्ण के पिता का नाम वसुदेव था इसलिए इन्हें आजीवन 'वासुदेव' के नाम से जाना गया। श्री कृष्ण के दादा का नाम शूरसेन था..

श्री कृष्ण का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद के राजा कंस की जेल में हुआ था।

श्री कृष्ण के भाई बलराम थे लेकिन उद्धव और अंगिरस उनके चचेरे भाई थे,

अंगिरस ने बाद में तपस्या की थी और जैन धर्म के तीर्थंकर नेमिनाथ के नाम से विख्यात हुए थे।

श्री कृष्ण ने 16000 राजकुमारियों को असम के राजा नरकासुर की कारागार से मुक्त कराया था और उन राजकुमारियों को आत्महत्या से रोकने के लिए मजबूरी में उनके सम्मान हेतु उनसे विवाह किया था।

क्योंकि उस युग में हरण की हुयी स्त्री अछूत समझी जाती थी और समाज उन स्त्रियों को अपनाता नहीं था।।

श्री कृष्ण की मूल पटरानी एक ही थी जिनका नाम रुक्मणी था जो महाराष्ट्र के विदर्भ राज्य के राजा रुक्मी की बहन थी।। रुक्मी शिशुपाल का मित्र था और श्री कृष्ण का शत्रु ।

दुर्योधन श्री कृष्ण का समधी था और उसकी बेटी लक्ष्मणा का विवाह श्री कृष्ण के पुत्र साम्ब के साथ हुआ था।

श्री कृष्ण के धनुष का नाम सारंग था। शंख का नाम पाञ्चजन्य था। चक्र का नाम सुदर्शन था। उनकी प्रेमिका का नाम राधारानी था जो बरसाना के सरपंच वृषभानु की बेटी थी। श्री कृष्ण राधारानी से निष्काम और निश्वार्थ प्रेम करते थे। राधारानी श्री कृष्ण से उम्र में बहुत बड़ी थी। लगभग 6 साल से भी ज्यादा का अंतर था।

श्री कृष्ण ने 14 वर्ष की उम्र में वृंदावन छोड़ दिया था।। और उसके बाद वो राधा से कभी नहीं मिले।

श्री कृष्ण विद्या अर्जित करने हेतु मथुरा से उज्जैन मध्य प्रदेश आये थे। और यहाँ उन्होंने उच्च कोटि के ब्राह्मण महर्षि सान्दीपनि से अलौकिक विद्याओ का ज्ञान अर्जित किया था।।

श्री कृष्ण की कुल 125 वर्ष धरती पर रहे । उनके शरीर का रंग गहरा काला था और उनके शरीर से 24 घंटे पवित्र अष्टगंध महकता था।

उनके वस्त्र रेशम के पीले रंग के होते थे और मस्तक पर मोरमुकुट शोभा देता था।

उनके सारथि का नाम दारुक था और उनके रथ में चार घोड़े जुते होते थे। उनकी दोनो आँखों में प्रचंड सम्मोहन था।

श्री कृष्ण के कुलगुरु महर्षि शांडिल्य थे।

श्री कृष्ण का नामकरण महर्षि गर्ग ने किया था।

श्री कृष्ण के बड़े पोते का नाम अनिरुद्ध था जिसके लिए श्री कृष्ण ने बाणासुर और भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें पराजित किया था।

श्री कृष्ण ने गुजरात के समुद्र के बीचो बीच द्वारिका नाम की राजधानी बसाई थी। द्वारिका पूरी सोने की थी और उसका निर्माण देवशिल्पी विश्वकर्मा ने किया था।

श्री कृष्ण को ज़रा नाम के शिकारी का बाण उनके पैर के अंगूठे मे लगा वो शिकारी पूर्व जन्म का बाली था,बाण लगने के पश्चात भगवान स्वलोक धाम को गमन कर गए।

श्री कृष्ण ने हरियाणा के कुरुक्षेत्र में अर्जुन को पवित्र गीता का ज्ञान रविवार शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन मात्र 45 मिनट में दे दिया था।

श्री कृष्ण ने सिर्फ एक बार बाल्यावस्था में नदी में नग्न स्नान कर रही स्त्रियों के वस्त्र चुराए थे और उन्हें अगली बार यु खुले में नग्न स्नान न करने की नसीहत दी थी।

श्री कृष्ण के अनुसार गौ हत्या करने वाला असुर है और उसको जीने का कोई अधिकार नहीं।

श्री कृष्ण अवतार नहीं थे बल्कि अवतारी थे....जिसका अर्थ होता है 'पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान' न ही उनका जन्म साधारण मनुष्य की तरह हुआ था और न ही उनकी मृत्यु हुयी थी।

सर्वान् धर्मान परित्यजम मामेकं शरणम् व्रज

अहम् त्वम् सर्व पापेभ्यो मोक्षस्यामी मा शुच--

(भगवद् गीता अध्याय 18)

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी

हे नाथ नारायण वासुदेव

अफ़ग़ानिस्तान में तालीबानी कब्ज़ा

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

अफ़गानिस्तान की बर्बादी पर असभ्य पाकिस्तान इतनी भी खुशी ना मनायें क्योंकि वक़्त का पहिया उसे अपनी गिरफ्त़ में भी लेकर उसे उसकी ही धुरी के बाहर फेंक सकता है।

तालिबान-अफगानिस्तान को लेकर दोहा में क्षेत्रीय सम्मेलन में भारत ने स्पष्ट कहा कि - बातचीत से ही सुलझ पाएगा संघर्ष। आज अफगानिस्तान की दुर्दशा पर पूरा विश्व सहमा हुआ है कि अफ़गानिस्तान में जो क्रूरता की सारी हदें पार हो चुकी हैं वो इस कलयुग का भयावह रूप है। अब यह और कितना भयानक होगा। इसे सम्पूर्ण विश्व की चुप्पी खुली आखों से देख रही है। बता दें कि तालिबान भी चीन की विस्तारवाद की बदनीति से प्रभावित होकर बाढ़ के पानी रूपी तबाही की तरह आगें बढ़ रहा है। कल तक जो हथियार तालिबान पर चलने थे, जो सेना तालिबान के खिलाफ़ तैयार होती थी, आज उन सब पर तालिबान का कब्ज़ा है। पूरी दुनिया में मंथन चल रहा है कि क्या मुट्ठी भर आतंकी पूरा देश कब्ज़ा सकते है? यह बात पूरी तरह हज़म नहीं होती कि राष्ट्रपति भाग गये और अफ़गानी चुप रहे? यहां तो पूरी की पूरी दाल ही काली नजर आ रही है। यह वैश्विक षड्यंत्र है या वैश्विक जटिल

राजनीत या कहें तो बदनीति। जिसमें सब मिले लगते हैं। उस पर से पाकिस्तान की खुशियों का बिखेरना यह साबित करता है कि यह आतंकी मुल्क है और यह जिस चीन और तालीबान पर इतना इतरा रहा है एत दिन समय का पहिया उसे अपनी गिरफ्त में भी लेकर उसे उसकी धुरी के बाहर भी फेंक सकता है।

सूत्रों के अनुसार अफ़ग़ानिस्तान के रणनीतिक रूप से अहम समांगन प्रांत की राजधानी को भी तालिबान ने सोमवार को अपने कब्ज़े में ले लिया।इसी दौरान अफ़ग़ानिस्तान सरकार समर्थित एक कमांडर ने भी तालिबान के पक्ष में जाने का फ़ैसला किया।उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान तेज़ी से बढ़ रहा है। कहा जा रहा है कि अशरफ़ ग़नी सरकार पर इस्तीफ़े का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है।अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने अफ़ग़ानिस्तान से 31 अगस्त तक अपने सभी सैनिकों को वापस बुलाने की घोषणा कर दी है। तभी से तालिबान का अफ़ग़ानिस्तान में प्रभाव लगातार बढ़ा है। अब तक 90 फ़ीसदी से ज़्यादा अमेरिकी सैनिकों की वापसी हो चुकी है। सैनिकों को बुलाने को लेकर दुनिया भर में राष्ट्रपति बाइडन की कड़ी आलोचना हो रही है। कहा जा रहा है कि अमेरिका ने 20 साल तक उस लड़ाई को लड़ा, जिसका कोई नतीजा नहीं निकला और अफ़ग़ानों को बीच मँझधार में छोड़कर निकल गया। सवाल उठता है कि क्या अमेरिका यह हिंसा पसंद करने लगा है या फिर वह आतंकवाद व क्रूरता के पक्ष में आ खड़ा हुआ है। कुछ राजनीति विचारकों का यह भी मानना है कि अमेरिका और तालीबान में भारी-भरकम कोई गुप्त डील हुई है। यह चर्चा इसलिए गरम है क्योंकि मंगलवार को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने अफ़ग़ानिस्तान से अपने सैनिकों की वापसी के फ़ैसले का बचाव किया और कहा कि उन्हें इसके लिए कोई पछतावा नहीं है। ऊपर से बाईडन का बयान यह है कि 75 हज़ार तालिबानी लड़ाके तीन लाख अफ़ग़ान सैनिकों पर भारी नहीं पड़ेंगे। इस पर तालिबान का बाइडन को जवाब- 'चाहें तो दो हफ़्तों में पूरे अफ़ग़ानिस्तान का कंट्रोल संभाल सकते हैं'। समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार तालिबान के अधिकारी शहाबुद्दीन दिलावर ने एक अनुवादक के माध्यम से यह भी कहा, 'हम सभी उपाय करेंगे ताकि 'इस्लामिक स्टेट' अफ़ग़ान क्षेत्र में काम न करे और हमारे क्षेत्र का इस्तेमाल हमारे पड़ोसियों के खिलाफ़ कभी नहीं किया जाए।'' तालिबान प्रतिनिधिमंडल ने उसी समाचार सम्मेलन

में कहा कि वे जातीय अल्पसंख्यकों के अधिकारों का सम्मान करेंगे और सभी अफ़ग़ान नागरिकों को इस्लामी क़ानून और अफ़ग़ान परंपराओं के ढाँचे में अच्छी शिक्षा का अधिकार होगा। दिलावर ने कहा, 'हम चाहते हैं कि अफ़ग़ान समाज के सभी प्रतिनिधि, एक अफ़ग़ान राष्ट्र के निर्माण में भाग लें।'' 20 साल अफ़ग़ानिस्तान में बिताने के बाद अमेरिका के नेतृत्व वाली पश्चिमी फौजें हट रही हैं और इसी कारण देश में नए इलाकों को तालिबान के कब्ज़े में लेने में अचानक तेज़ी देखी जा रही है। इन दोनों देशों के बीच तुर्की भी बहती गंगा में हाथ धोने की फिराक में है यानि तुर्की में बहुत से लोग इसे एक अवसर के तौर पर देख रहे हैं ताकि इस क्षेत्र में वो अपना रसूख बढ़ा सके और अमेरिका के साथ उतार-चढ़ाव भरे रिश्तों को बेहतर बनाया जा सके। अब बात आती है कि आखिर! तालिबान के पास इतनी ताकत कैसे? तो जवाब है ''बेशुमार दौलत''। अंग्रेजी समाचार वेबसाइट 'इंडिया टुडे' की रिपोर्ट के मुताबिक 2021 का तालिबान 1990 के तालिबान से काफ़ी अलग दिखाई देता है। तालिबान के पास एक दम नयी तकनीक के हथियार और आधुनिक एसयूवी गाड़ियां आ गई हैं। तालिबान के उग्रवादी जो कपड़े पहनते हैं वो एकदम नए और साफ सुथरे दिखते हैं। जबकि पहले की वेशभूषा और उनका रहन-सहन कबीलों की तरह था। हालांकि तालिबान की सोच या कहें विचारधारा अभी भी पहले जैसी ही है। उसमें कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। केवल मुखोटा चैंज हुआ बाकि असली सूरत वही की वही है 'क्रूर'। जिसकी बातें विश्वास के काबिल कतई नहीं है।

फोर्ब्स के मुताबिक तालिबान का सालाना कारोबार तकरीबन 400 मिलियन डॉलर आंका गया था। साल 2016 में तालिबान काफी कमजोर था। समय के साथ-साथ उसकी ताकत और पैसों के खजाने में भी वृद्धि हुई।रेडियो फ्री यूरोप/रेडियो लिबर्टी ने नाटो की खुफिया रिपोर्ट के हवाले से तालिबान की असल संपत्ति का खुलासा किया। इस रिपोर्ट को देखकर समझा जा सकता है कि साल 2016 के मुकाबले तालिबान की संपत्ति में काफी ज्यादा इज़ाफा हुआ है।

रिपोर्ट में वित्त वर्ष 2019-20 में तालिबान का सालाना बजट 1.6 अरब डॉलर बताया गया। जो साल 2016 के मुकाबले 400 फीसदी ज्यादा है।इस रिपोर्ट में तालिबान को कहां-कहां से पैसा आता है उसकी भी जानकारी दी गई है। बता दें कि माइनिंग से 464 मिलियन डॉलर, मादक पदार्थों की तस्करी से 416 मिलियन डॉलर, चंदे से 240 मिलियन डॉलर रुपए कमाता है। इसके अलावा तालिबान अलग-अलग लोगों से 249 मिलियन डॉलर, टैक्स के नाम पर 160 मिलियन डॉलर और रियल स्टेट से 80 मिलियन डॉलर की कमाई करता है।

नवीनतम अमेरिकी सैन्य खूफिया आकलन से पता चलता है कि काबुल 30 दिनों के भीतर विद्रोहियों के दबाव में आ सकता है और अगर मौजूदा रुख जारी रहा तो तालिबान कुछ महीनों के भीतर देश पर पूर्ण नियंत्रण हासिल कर सकता है। यदि तालिबान यही गति बनाए रखता है तो अफगान सरकार को आने वाले दिनों में पीछे हटने और राजधानी और केवल कुछ अन्य शहरों की रक्षा के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।बता दें कि तालिबान ने शुक्रवार को चार और प्रांतों की राजधानियों पर कब्जा करते हुए देश के समूचे दक्षिणी भाग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और अब वह धीरे-धीरे काबुल की तरफ बढ़ रहा है। दक्षिणी भाग पर कब्जे का मतलब है कि तालिबान ने 34 (कंधार) प्रांतों में से आधे से ज्यादा की राजधानियों पर अपना नियंत्रण बना लिया है। इसके अलावा कई प्रांतों के नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी बंदी बना लिया है।आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक एक राजनीतिक हल निकालने की कोशिश में भारत की अहम भूमिका है। तालिबान को लेकर भारत की अपनी चिंताएं हैं, मगर अफगानिस्तान में शांति की हर कोशिश का भारत ने समर्थन किया है। वहीं, अफगानिस्तान में भारत द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं को लेकर तालिबान की तरफ से बयान जारी किया गया है। इसके साथ ही तालिबान की तरफ से भारत को अफगानिस्तान में सैन्य मौजूदगी के रूप में शामिल न होने की चेतावनी भी दी गई है। तालिबान के प्रवक्ता मोहम्मद सुहैल शाहीन ने कहा है कि हम अफगानिस्तान के लोगों के लिए किए गए हर काम की सराहना करते हैं, जिसमें बांध, राष्ट्रीय और बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शामिल हैं। कुछ भी जो अफगानिस्तान के विकास, पुनर्निर्माण और लोगों के लिए आर्थिक समृद्धि के लिए किया जा रहा है वो तारीफ के काबिल है। तालिबान ने साफ किया है कि हमारी तरफ से दूतावासों और राजनायिकों को कोई खतरा नहीं है। हम किसी दूतावास या राजनायिक को निशाना नहीं बनाएंगे। हमने अपने बयानों में कई बार ऐसा कहा है, ये हमारी प्रतिबद्धता में शामिल है। यह सच है कि भारत के सभी देशों से अच्छे सम्बन्ध हैं। अफ़गानिस्तान हो या तालिबान भारतियों को डरने की जरूरत नहीं है फिर भी सुरक्षा कारणों से भारत सरकार ऐड़ी चोटी के जोर से अपने सभी नागरिकों को अफ़गानिस्तान से निकालने में लगी है। क्योंकि विश्व भर में प्रत्येक भारतीय की सलामती को लेकर भारत सरकार भी प्रतिबद्ध और कृतसंकल्पित है। अब कंधार पर भी कब्ज़ा होने के बाद अब पूरे विश्व में यह कयास लगाये जा रहे हैं कि अब तालीबान ने अफगानिस्तान में जबर्दस्त सेंधमारी कर दी है यानि शेर के मुंह में खून लग चुका है तो अब वह रूकने वाला नहीं है। हो सकता है पूरे ही अफ़ग़ानिस्तान पर तालीबानी कब्ज़ा हो जाये क्योंकि क्रूरता से यह सम्भव भी है पर ताज्जुब इस बात का है कि तालिबान की बहुत पुरानी इस क्रूर बदनीति पर यूनाइटेड नेशन और विश्व के सभी 57 इस्लामिक देशों ने चुप्पी क्यों साध रखी है? क्या अफ़ग़ानी उनके मुस्लिम भाई-बहन नहीं? अब कहां है क़ौम के नाम पर एक होने का्रिकार्ड? अब इस तरह के असहिष्णु माहौल को देखकर ऐसा ही लगता है कि इस हैवानियत को जन्म देने वाली इस क्रूर राजनीतिक सत्तालोलुप 'कलयुगी मानसिकता' के चलते नैतिकमूल्यों का पूरी तरह नाश हो चुका है और आने वाले समय में शांति और अभय की गोद पाने के लिए हम पृथ्वी वासियों को ''प्रेम'' और ''मानवता'' जैसे दिव्य गुणों को स्वंय में खोजना होगा क्योंकि इसके अलावा बाकि सबकुछ क्रूरता से पाया जा सकता है।

खेल पुरस्कार कार्यक्रम स्थगित

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

सर्वप्रथम सच की दस्तक राष्ट्रीय मासिक परिवार की तरफ से टोक्यो ओलिंपिक में भारत के नाम का डंका बजाने वाले सभी खिलाड़ियों को सैल्यूट। हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समारोह होता है जोकि इस साल कुछ समय के लिए टाल दिया गया है क्योंकि सरकार चाहती है कि चयन पैनल तोक्यो पैरालंपिक में भाग लेने वाले पैरा खिलाड़ियों के प्रदर्शन को भी इनमें शामिल करे। पैरालंपिक खेलों का आयोजन तोक्यो में 24 अगस्त से पांच सितंबर तक होगा। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि पुरस्कार विजेताओं को चुनने के लिये चयन पैनल गठित कर लिया गया है लेकिन चयन प्रक्रिया में आगे बढ़ने से पहले वे कुछ और समय इंतजार करना चाहेंगे। ठाकुर ने राष्ट्रीय युवा पुरस्कार समारोह के दौरान कहा, ''इस साल के लिये राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समिति गठित कर दी गयी है लेकिन पैरालंपिक का आयोजन किया जाना है इसलिये हम पैरालंपिक के विजेताओं को भी इसमें शामिल करना चाहते हैं। मुझे उम्मीद है कि वे अच्छा प्रदर्शन करेंगे। ''

राष्ट्रीय पुरस्कार - खेल रत्न पुरस्कार, अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार और ध्यानचंद पुरस्कार - हर साल देश के राष्ट्रपति द्वारा 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर दिये जाते हैं जो महान हॉकी खिलाड़ी मेजर

ध्यानचंद की जयंती भी है। मंत्रालय के एक सूत्र ने कहा, ''पिछली बार की तरह इस साल भी पुरस्कार समारोह वर्चुअल कराये जा सकते हैं। '' राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिये नामांकन प्रक्रिया दो बार बढ़ाये जाने के बाद पांच जुलाई को समाप्त हुई थी। महामारी को देखते हुए आवेदन करने वाले खिलाड़ियों को ऑनलाइन खुद ही नामांकित करने की अनुमति थी लेकिन राष्ट्रीय महासंघों ने भी अपने चुने हुए खिलाड़ी भेजे। भारतीय दल ने हाल में समाप्त हुए तोक्यो ओलंपिक में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिसमें देश के खिलाड़ियों ने एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य सहित कुल सात पदक जीते। भारत तोक्यो में 54 पैरा एथलीटों का सबसे बड़ा दल भेज रहा है।

पिछले पैरालंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ी दो स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य सहित चार पदक लेकर लौटे थे। देश के सबसे बड़े खेल सम्मान खेल रत्न को हाल में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के नाम पर किया गया जो पहले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नाम पर था। पिछले वर्ष खेल पुरस्कारों की पुरस्कार राशि में काफी वृद्धि की गयी थी। खेल रत्न में अब 25 लाख रूपये का पुरस्कार मिलता है जो पहले के साढ़े सात लाख से काफी ज्यादा है। अर्जुन पुरस्कार की पुरस्कार राशि पांच लाख से बढ़ाकर 15 लाख रूपये कर दी गयी। पहले द्रोणाचार्य (लाइफटाइम) पुरस्कार हासिल करने वालों को पांच लाख रूपये दिये जाते थे जिन्हें बढ़ाकर 15 लाख रूपये कर दिया गया। द्रोणाचार्य (नियमित) पुरस्कार हासिल करने वाले प्रत्येक कोच को पांच लाख के बजाय 10 लाख रूपये मिलते हैं।

देवभूमि उत्तराखंड के कुमांऊ के पारंपरिक लोकवाद्य यंत्र

भुवन बिष्ट
रानीखेत, उत्तराखण्ड

इस समय वैश्विक महामारी कोरोना ने चारों ओर अपने पैर पसारे हैं। कोरोना से बचाव के लिए विभिन्न आयोजनों को भी सीमित कर दिया गया है। कोरोना की जंग हम सभी मिलकर जीत जायेंगे और भारत देश में पुनः खुशहाली आ जायेगी। देवभूमि उत्तराखण्ड सदैव ही प्राकृतिक सौन्दर्य , आध्यात्मिक, धार्मिक, पर्यटन स्थलों के साथ साथ अपनी लोकसंस्कृति, परंपराओं व सभ्यता के लिए विश्वविख्यात है । लोकसंस्कृति को जीवंत करने व इसे मनोहारी कर्णप्रिय बनाने में कुमांऊ के लोकवाद्य यंत्रों का विशेष महत्व है। इन लोक वाद्य यंत्रों में आज अनेक पारंपरिक लोकवाद्य यंत्र आधुनिकता की चकाचौंध में विलुप्त हो चुके हैं और कुछ पारंपरिक लोकवाद्य यंत्र अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत हैं।

देवभूमि उत्तराखण्ड के कुमांऊ में इन लोक वाद्य यंत्रों को मंदिरों में होने वाले आयोजनों, वैवाहिक समारोंहों , उत्सवों, मेलों, छोलिया नृत्य कोई भी मांगलिक शुभ कार्यो में इन्हें बजाया जाता है । कुमांऊ के पारंपरिक लोकवाद्य यंत्रों में ढोल, दमांऊ, नगाड़े, मशकबीन, बड़ा

ढोल, रणसिंग आदि का प्रमुख स्थान है ये लोक वाद्य यंत्र कर्णप्रिय होते हैं।

ढोल - ढोल देवभूमि के कुमांऊ क्षेत्र का पारंपरिक लोकवाद्य यंत्र है। ढोल का उपयोग विभिन्न मांगलिक अवसरों, जागर,छोलिया नृत्य व लोकदेवता के मंदिरों में भी विशेष अवसरों आयोजनों में किया जाता है।ढोल छोलिया नृत्य का भी एक प्रमुख वाद्य यंत्र है। ढोल सर्वप्रथम युद्ध में वीरों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयोग किया था। ढोल - दमाऊँ साथ-साथ बजाए जाते हैं। यह देवभूमि उत्तराखंड के सबसे लोकप्रिय वाद्य-यंत्रों में से एक है। इसको आज भी मांगलिक कार्यों, समूहिक नृत्यों, धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा यात्राओं, लोक उत्सवों और विवाह समारोह में बजाया जाता है, ढोल को विजेसार के नाम से भी कुमांऊ में जाना जाता है।

दमाऊं (दमुवा)-उत्तराखण्ड के पारंपरिक लोकवाद्य यंत्रों में दमाऊं, दमुवा का अपना एक विशेष महत्व है। दमांऊ (दमुवा) पहाड़ का सबसे लोकप्रिय वाद्य यंत्र है। ढोल और दमांऊ का अनूठा संबध रहा है, ये एक दूसरे के बिना अधूरे होते हैं । इन्हें साथ साथ बजाया जाता है। देवभूमि उत्तराखण्ड में पारंपरिक लोक उत्सवों,मेलों,मंदिरों, व विभिन्न आयोजनों पर दमुवां व ढोल बजाये जाते हैं । दमाऊँ गले में डालकर दोनों हाथों से नगाड़े की भांति बजाया जाता है। दमांऊ कढ़ाईनुमा तांबे के खोल में खाल से तैयार किया जाता है। दमांऊ (दमुवा) का व्यास लगभग एक फिट तक होता है। दमांऊ की पुड़ी कसने के लिए विशेष तरह की रस्सी उपयोग में लाई जाती है। जिससे इसे बार बार कसने की आवश्यकता नहीं होती है। इसे बनाते समय ही अच्छी तरह से कस दिया जाता है। दमांऊ (दमुवा) की आकृति अर्ध गोले के आकार की गहरी बड़ी कटोरी के आकार की होती है। दमांऊ दमुवा को कंधे में लटकार अथवा जमीन पर रखकर भी बजाया जाता है।दमांऊ की धुन व ढोल की धुन का आपस में गहरा संबध है।छोलिया नृत्य का यह सबसे महत्वपूर्ण लोक वाद्य यंत्र है।

मशकबीन -- मशकबीन देवभूमि के पर्वतीय अंचल का एक प्रमुख लोकवाद्य यंत्र है। मशकबीन छोलिया नृत्य का एक प्रमुख वाद्य यंत्र है। इसकी ध्वनि कर्णप्रिय होती है, मशकबीन में एक मुख्य भाग चमड़े की थैलीनुमा मशक होता है। इसमें पांच छेद किये जाते हैं चार छेदों में पिपरियां लगाई जाती हैं। मशकबीन को बजाते समय बगल में दबाया जाता है, बगल में दबाकर एक नली को मुंह में डालकर वादक इसमें लगातार हवा भरता है। फूंक मारने वाली नली के अंदर पिपरी नहीं होती है । दूसरी पिपरी से वादक अंगुलियों की सहायता से इस वाद्य यंत्र में आवश्यकतानुसार धुन निकालता है। बांसुरी को चंडक कहते हैं। जब मशक के अंदर वादक द्वारा हवा भरी जाती है तो यह चार भागों में विभाजित होती है। चंडक में जाने वाली हवा से ही बांसुरी की तरह धुनें निकलती है। दूसरी हवा तीन पाइपों में जाती हैं जो कंधे में पिछे की ओर लटके होते हैं। इनमें एक जैसा ही स्वर निकलता है। ये बासुंरी वाली धुन के सहायक बने होते हैं और धुन के सौंगर्य व मधुरता को बढा देते हैं । मशकबीन को बिणबाजे के नाम से भी जाना जाता है यह प्राचीन समय से ही लोक वाद्य यंत्र रहा है।

देवभूमि उत्तराखण्ड के विभिन्न लोकवाद्य यंत्रों का अपना एक विशेष महत्व है। लोकवाद्य यंत्रों व लोकसंस्कृति का सदैव ही अनूठा संबंध रहा है।

■■

घेवर रेसपी

सावन और राखी के त्यौहार की विशेष मिठाई घेवर है।

महत्वपूर्ण सामग्री -

2 कप मैदा

1/2 कप दूध

1/4 कप घी

5-6 बर्फ के टुकड़े

4 कप पानी

1 कप रबड़ी या मावा

2 टेबल स्पून कटे हुये बादाम, काजू, पिस्ता, चांदी वरक

आवश्यकतानुसार वर्क

चाशनी के लिये सामग्री-

2 कप चीनी

1 कप पानी

1 चम्मच इलायची पाउडर

जरूरत के अनुसार तलने के लिये घी

विधि -

- सबसे पहले एकलतार की चाशनी बनाएंगे।
- इसके लिए हम एक बर्तन लेंगे और उसमें 2 कप यानी 400 ग्राम चीनी डाल देगें।
- चीनी के साथ ही हम इसमें 2 कप पानी डाल देंगे।

- जब चीनी में उबाल आ जाए तब हम इसमें इलायची पाउडर डाल देंगे।
- अब हम एक कड़ाही लेंगे और उसमें डेढ़ लीटर दूध डाल देंगे दूध को रबड़ी जैसा गाढा होने तक पकाएंगे।
- अब इसमें हम इसमें चीनी डाल देंगे।
- अच्छी तरह से दूध को मिक्स करके हम इसे एक बर्तन निकाल लेंगे और ठंडा होने के लिए रख देंगे।
- अगर आप घर पर रबड़ी नहीं बनाना चाहते है तो आप मावा लाकर उसे घी में भून लीजिए और फिर उसमें दूध डालकर उसे रबड़ी जैसा गाढ़ा कर लीजिए। बिल्कुल मार्केट जैसी रबड़ी तैयार हो जाएगी।
- फिर हम घेवर बनाने का घोल तैयार करेंगे।
- इसके लिए हम मिक्सी जार लेंगे और उसके अंदर 2 बड़े चम्मच घी डाल देंगे।
- घी के साथ ही हम इसमें 1 गिलास दूध डाल देंगे।
- अब हम मिक्सी या हाथों से चलाकर घी और दूध को अच्छे से मिक्स कर लेंगे।
- जब दूध और घी आपस में मिक्स हो जाए तब हम इसमें थोड़ा-थोड़ा करके मैदा डालेंगे और थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर मिक्सी में मैदे को अच्छे से फेंट लेंगे। यहाँ बिल्कुल ठंडे वर्फ के पानी का इस्तेमाल करना है।
- इसी तरह सारे मैदे को हम अच्छी तरह फेट लेंगे।
- घोल को पतला रखना है, ज्यादा गाढ़ा नहीं रखना है।
- अब घोल को हम एक बर्तन में निकाल लेंगे और उसमें नींबू का रस डालकर इसे अच्छे से मिक्स कर लेंगे।
- फिर हम एक कड़ाही लेंगे और उसमें घी डाल लेंगे।
- जब घी अच्छे से गर्म हो जाए तब हम इसमें 2 चम्मच मैदे का घोल डाल देंगे।
- मैदे से जब झाग बनने बंद हो जाए तब हम इसमें 2 चम्मच मैदा और डाल देंगे।
- साथ हम कड़ाही वाले मैदे को कड़ाही में गोल आकृति में सेट करेंगे। इसके लिए जब डाला हुआ मैदा थोड़ा भून जाएगा तब हम इसे चिमटे की मदद से किनारे पर कर देंगे। और बीच में गोल खाली जगह बना लेंगे और फिर उसमें थोड़ा सा घोल और डाल देंगे और फिर से उसे किनारे में ले जाएंगे।
- कड़ाही का बीच का भाग खाली रहना चाहिए और आसपास गोल आकृति में मेंदे को सेट करना है जैसा की घेवर में होता है। अगर आपकी कड़ाही बहुत बड़ी है तो आप कड़ाही के बीच में कोई गोल सांचा रख दें और उसके अंदर घेवर का पेस्ट डालें। आपका घेवर आसानी से बन जाएगा।
- घेवर के बीच में छेद होता है और उसकी आकृति गोल होती है।
- इसी तरह हम एक घेवर में लगभग 9 चम्मच मैदा डालेंगे।
- जब घेवर मार्केट जितना मोटा बतन जाएगा तब हम इसमें घोल डालना बंद कर देंगे और बीच में फिर से छेद बना लेंगे। इसी छेद में चिमटा डालकर हम घेवर को कड़ाही से बाहर निकाल लेंगे।
- जब घेवर पक जाएगा तब घेवर कड़ाही अपने-आप छोड़ देगा।
- इसी तरह हम सारे घेवर बना लेंगे।
- अब हम घेवर को चाशनी में डालकर मीठा कर लेंगे।
- घेवर को मीठा करने के बाद हम घेवर पर रबड़ी, ड्राईफ्रूट, चांदी वरक आदि से सजा देंगे।

■■

जंगलों पर हो रही राजनीति की कहानी है 'शेरनी

शकुंतला देवी की बायोपिक के बाद अमेजन प्राइम वीडियो पर विद्या बालन की फिल्म शेरनी रिलीज हुई हैं। फिल्म वन विभाग से जुड़े एक बहुत ही बड़े मुद्दे को उठाती हैं। फिल्म की कहानी बाघों की हत्या जैसे गंभीर सब्जेक्ट पर आधारित हैं जिसके विषय में सरकारों सहित लोगों को भी सोचना चाहिए। फिल्म में एक डायलॉक है जो फिल्म की कहानी का सार बया करता है- 'अगर विकास के साथ जीना है तो पर्यावरण को बचा नहीं सकते और अगर पर्यावरण को बचाने जाओ तो विकास बेचारा उदास हो जाता है।'

इस डायलॉग को आप आज की परिस्थिति से भी जोड़कर देख सकते हैं। देश कोरोना महामारी की चपेट में हैं। ये महामारी भी पर्यावरण से छेड़छाड़ करने का ही नतीजा है। कोरोना को रोकने के लिए विश्वभर में लॉकडाउन लगाया गया जिसकी वजह से विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्था कई साल पीछे चली गयी। बाघों की हत्या पूरे विश्व के लिए एक बुहत बड़ा मुद्दा है, इस लिए भारत सरकार कई राज्यों में सेव टाइगर की मुहीम चला रही

हैं। विद्या बालन की फिल्म शेरनी में एक छोटा सा बच्चा अपने कक्षा में पढ़ाई गयी लाइन को दोहराते हुए कहता है कि बाघों के कारण ही जंगल है, जंगल है तो बारिश है, पानी है तो इंसान हैं, इस लिए इंसानों के लिए जंगलों का होना बहुत जरूरी है। जंगल तभी रहेगा जब उनमें जानवर होगें। बाघों की हत्या जैसे मुद्दे को लेकर बनायी गयी फिल्म में आप देखेंगे कि कैसे राजनीति और प्रशासनिक स्तर पर लोगों की दोगलेबाजी, स्वार्थ के कारण जंगलों का नाश होता जा रहा है।

फिल्म की कहानी

फिल्म शेरनी में विद्या विन्सेंट (विद्या बालन) 6 साल वन विभाग में डेस्क पर नौकरी करने के बाद जंगल में डीएफओ की पोस्ट पर आती हैं। वह यहा के हालात को देखती है और कमियों पर काम करती है। विद्या एक सख्त ऑफिसर है लेकिन हिंदी फिल्मों की तरह हीरोगिरी नहीं करती हैं। फिल्म में आप देखेंगे की एक टाइगर गांव वालों पर हमला करना शुरू कर देता हैं। टी12 नाम की ये शेरनी अपना रास्ता भटक गयी है और वापस जंगल की और बढ़ रही है। रास्तें में गावों और खेत होने शेरनी लोगों का शिकार भी करती है। शेरनी के शिकार का मुद्दा राजनीतिक बन जाता है क्योंकि प्रदेश में चुनाव होने वाले हैं और राजनीतिक पार्टियों ने टाइगर अटैक को पॉलिटिकल मुद्दा बना दिया है। टाइगर अटैक को रोकने के लिए क्षेत्र के विधायक शेरनी को मारने का ऐलान कर देते हैं। वन विभाग की टीम को काम करने नहीं दिया जाता। वन विभाग पर राजनैतिक प्रेशर डाला जाता है। अब विन विभाग की डीएफओ विद्या विन्सेंट को शेरनी को बचाने की चुनौती होती है। फिल्म में आप देखेंगे कि सरकारी अफसर कैसे राजनीतिक दबाव और स्वार्थ के सामने अपने घुटने टेक देते हैं।

कलाकार , एक्टिंग और निर्देशन

फिल्म में विद्या बालन के अलावा मुकुल चड्ढा, विजय राज, नीरज काबी, शरत सक्सेना, बृजेंद्र काला जैसे बड़े कलाकार है। विद्या बालन की आदाकारी से हम सभी वाकिफ है कि वह जिस भी किरदार को निभाती है उसे पर्दे पर जिंदा कर देती हैं। विद्या बालन ने एक गंभीर ऑफिसर का किरदार बहुत ही शानदार तरीके से निभाया है। निर्देशक अमित मसुरकर ने फिल्म को बहुत ऑरिजनल तरीके ने निर्देशित किया है। बहुत बारीकी से चीजे दिखायी है। वहीं कहानी को भी जमीनी स्तर से जोड़ कर दिखाया गया है। नेशनल पार्क के जो इलाके होते हैं वहां जिस तरह की समस्याएं होती है उन्हें फिल्म में दिखाया गया है। फिल्म एक सब्जेक्टिव मूवी है जो एक गंभीर मुद्दें पर ध्यान आकर्षित करती है। अवार्ड की दृष्टि से कई अवार्ड जीतने वाली सब्जेक्टिव मूवी है। ■■

ज़रा याद करो कुर्बानी...
''अंतिम बलिदान''

बीस साल पहले हिमाचल प्रदेश के एक गांव से एक पत्र रक्षा मंत्रालय के पास पहुंचा। पत्र लिखने वाले एक स्कूल के शिक्षक थे और उन्होंने अनुरोध किया था कि यदि संभव हो सके तो क्या उन्हें और उनकी पत्नी को उस स्थान को देखने की अनुमति दी जा सकती है जहां कारगिल युद्ध में उनके इकलौते पुत्र की मृत्यु हुई थी और वह भी उनकी मृत्यु की पहली बरसी वाले दिन, जो 07/07/ 2000 को था। उनका कहना था कि यदि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के विरुद्ध है, तो उस स्थिति में वे अपना आवेदन वापस ले लेंगे।पत्र पढ़ने वाले विभाग के अधिकारी ने सोचा कि उस शहीद के माता पिता के दौरे को प्रायोजित करने में काफी रकम का खर्च आएगा, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके दौरे की कीमत क्या है। पत्र पाने वाले उस अधिकारी ने निर्णय लिया कि इसे अगर विभाग तैयार नहीं होता तो इस दौरे के खर्च को अपने वेतन से भुगतान करेगा और उसने एक आदेश जारी किया कि उस शिक्षक और उनकी पत्नी को उस स्थान पर ले जाया जाए जहाँ उनका इकलौता लड़का शहीद हुआ था। अतः उस दिवंगत नायक के स्मरण दिवस पर, बुजुर्ग दंपत्ति को सम्मान के साथ रिज पर लाया गया। जब उन्हें उस

स्थान पर ले जाया गया। जहाँ उनका पुत्र शहीद हुआ था तो ड्यूटी पर मौजूद सभी लोगों ने खड़े होकर सलामी दी। लेकिन एक सिपाही ने उन्हें फूलों का गुच्छा दिया, झुककर उनके पैर छुए, दोनों माँ-बाप की आंखें पोंछी और उन्हें प्रणाम किया।

शिक्षक ने कहा, 'आप एक वरिष्ठ अधिकारी हैं। आप मेरे पैर क्यों छूते हो?

'ठीक है, सर', उस अधिकारी ने कहा, 'मैं यहाँ अकेला हूँ जो आपके बेटे के साथ था और यहाँ अकेला था जिसने आपके बेटे की वीरता को मैदान पर देखा था।' पाकिस्तानी अपने एच.एम.जी. से प्रति मिनट सैकड़ों गोलियां दाग रहे थे। हम में से पाँच तीस फीट की दूरी तक आगे बढ़े और हम एक चट्टान के पीछे छिपे हुए थे। मैंने कहा, 'सर, मैं 'डेथ चार्ज' के लिए जा रहा हूं। मैं उनकी गोलियों के सामने जा रहा हूं और उनके बंकर में जाकर ग्रेनेड फेंकूंगा। उसके बाद आप सब उनके बंकर पर कब्जा कर सकते हैं।' मैं उनके बंकर की ओर भागने ही वाला था लेकिन आप के बेटे ने कहा, 'क्या तुम पागल हो? तुम्हारी एक पत्नी और बच्चे हैं। मैं अभी भी अविवाहित हूँ, मैं जाता हूँ।' आई विल डू द डेथ चार्ज एंड यू डू द कवरिंग' और बिना किसी हिचकिचाहट के उसने मुझसे ग्रेनेड छीन लिया और डेथ चार्ज के लिए भाग गया।पाकिस्तानी एच.एम.जी. की ओर से बारिश की तरह गोलियां आ रही थीं पर आपका बेटा उन्हें चकमा देते हुए गोलियों को अपनी छाती पर सहते हुए पाकिस्तानी बंकर के पास पहुंचा, ग्रेनेड से पिन निकाला और उसे ठीक बंकर में फेंक दिया। इस तरह तेरह पाकिस्तानियों को मौत के घाट उतार दिया गया। उनका हमला समाप्त हो गया और क्षेत्र हमारे नियंत्रण में आ गया। मैंने आपके बेटे का शव उठा लिया सर। उसे बयालीस गोलियां लगी थी। मैंने उसका सिर ज्यों ही अपने हाथों में लिया उसी वक्त पेट के बल उठकर उसने अपनी आखिरी सांस के साथ कहा, 'जय हिंद!'

मैंने अपने वरिष्ठ से कहा कि वह आपके बेटे के ताबूत को आपके गाँव लाने की अनुमति दे लेकिन उसने मना कर दिया।हालाँकि मुझे इन फूलों को उनके चरणों में रखने का सौभाग्य कभी नहीं मिला, लेकिन मुझे उन्हें आपके चरणों में रखने का सौभाग्य मिला है, श्रीमान।

शिक्षक की पत्नी अपने पल्लू के कोने में धीरे से रो रही थी लेकिन शिक्षक नहीं रोए।उन्होंने उस जवान से कहा कि मैंने अपने बेटे के छुट्टी पर आने पर पहनने के लिए एक शर्ट खरीदी थी लेकिन वह कभी घर नहीं आया और वह कभी आएगा भी नहीं। सो मैं उसे वहीं रखने को ले आया जहाँ वह शहीद हुए था। पर अब आप इसे क्यों नहीं ले लेते और उसकी जगह आप ही पहन लेते बेटा?'

कारगिल के इस महानायक का नाम था परमवीर चक्र से सम्मानित 'कैप्टन विक्रम बत्रा' । यह हैं, उनके पिता का नाम गिरधारी लाल बत्रा है और उनकी माता का नाम कमल कांता है। आज स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर सच की दस्तक राष्ट्रीय मासिक पत्रिका परिवार की तरफ से आपको कोटि-कोटि नमन। हिंद के समस्त योद्धाओं को सैल्यूट।

बनारस की वीरांगना बेटी
रानी लक्ष्मीबाई

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

' जवानियाँ जिन्हें निहार
रूप भी मचल उठे
हँसो अगर तो मरघटों में
ज़िंदगी मचल उठे
अगर लहू बह दिया
बुझे चिराग़ जल उठे
न स्वेद बिंदु तक सके
रवानियाँ मिटी नही
शलभ सी जूझती रहे
जवानियाँ मिटी नहीं.....'

' अंग्रेज मेरी देह को छूने भी न पाएं... हर हर महादेव ...ऊं

वासुदेवाय नमः... मुखरित करते मात्र 23 वर्ष की नवयौवन स्त्री मातृभूमि की आज़ादी के लिए वीरांगना हुई । गीता के 18 वें अध्याय को पढ़कर आख़री युद्ध के लिए रैली निकली थी उस दिन।

इतिहास के पन्नों पर अंकित है, जब तक किसी महान देशभक्त ने हिंदुस्तान को विदेशियों के चुंगल से छुड़ाने का बीड़ा उठाया ; तब तब देश भक्ति की राह में रोड़े बिछाने के लिए देशद्रोहियों की भी कमी नहीं रही ।

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीर ,साहसी, बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ व उदार स्त्री को भी कोई परास्त न कर पाता ।यदि पीर अली, दूल्हाजु और नवाब अली ' बहादुर' जैसे आस्तीन के सांपों को उन्होंने दूध न पिलाया होता । किंतु फिर भी अपनी राह से अवरोधों को दूर करते हुए, उस वीरांगना ने अंग्रेजों को छठी का दूध याद दिला दिया था, और स्वाधीनता संग्राम के हवन- कुंड में अपना जीवन आहूत कर डाला था ।

बचपन

आइए जय बोलते हैं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की..... विश्व प्रसिद्ध वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई का जन्म कार्तिक वदी 14 सं0 1891 अर्थात नवम्बर, सन 1835 ई0 को काशी (बनारस) में हुआ था। बचपन का नाम 'मनुबाई', पितामह कृष्णराव ताम्बे ,पिता मारोपंत ,माता भागीरथी बाई.....

पालन पोषण की जिम्मेदारी मनु के बाबुल मारोपन्त पर आ पड़ी ।मनु बाबुल के बगिया की चहकती ,मचलती बुलबुल थी। सुंदर, छबीला ,जोशीला....।

नाना साहेब, राव साहब बचपन के साथी संग मनु ,मल ,खम्भ, कुश्ती तलवार, बंदूक चलाना, घुड़सवारी करना और पढ़ना लिखना सब कुछ सीखने लगी। छत्रपति शिवाजी, अर्जुन ,भीम आदि के पुरातन अध्ययन से उसे नई प्रेरणा मिलती रही। 'नारीत्व में पुरुषत्व का पौरुष पुलकित होने लगा। बेटी अब वीर बन रही थी ।

झांसी से पधारे तात्या दीक्षित ने मनु की जन्मपत्री देखकर कहा - ऐसी विलक्षण बेटी को तो कहीं की रानी होनी चाहिए।'

झांसी के राजा गंगाधर

राव विधुर थे । उनकी आयु भी 40 वर्ष की थी। दीक्षित जी झांसी जाकर पुनः बिठूर लौटे और राव के साथ बिटिया मनु के विवाह का प्रस्ताव रखा ।सबकी सहमति भी मिल गई । श्रृंगारित मनु दुर्गा-सी लग रही थी और सगाई का उत्सव बाजीराव ने धूमधाम से मनाया।

विवाह

विवाह के लिए मारोपंत को झांसी जाना पड़ा। मनु भी गई ।भाग्य में जो लिखित है घटित होकर ही रहता है ।12 वर्ष की छबीली बनकर 'मनु' 'बिटिया का विवाह एक अधेड़ राजा से हो ही गया । विवाह की समाप्ति पर दरबार लगा , नज़र- न्यौछावरें हुई ,पुरस्कार बँटे और मनुबाई को नया नाम दिया गया - झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

सन 18 04 में शिवराव झाऊ झांसी के शासक थे। पेशवा के कमज़ोर हो जाने के कारण बाद में शिवराव के तीसरे पुत्र गंगाधर राव ने शासन संभाला। गंगाधर राव कानपुर जा कर अंग्रेज़ से मिले ।उस समय मध्य भारत के लिए गवर्नर जनरल का एजेंट 'साइमन फ्रेजर' था। कमीशन ने

गंगाधर राव को झांसी राज का उत्तराधिकारी घोषित किया।

विधुर और अधेड़ राजा से विवाहित होने के बाद रानी लक्ष्मीबाई (मनु) बाल्यावस्था यौवनावस्था में पदार्पण कर रही थी, लेकिन उसे नए और सौंदर्य परिधान पहनने का शौक नहीं था।चपल-चंचल मनु में विवाह के बाद अनेक परिवर्तन आए। कम बोलना नियमित गीता का पाठ करना, अपनी दासियों को सहेलियां बनाना और चुपके-चुपके सभी को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देना।

रानी को शूद्रक कवि रचित चारुदत्त ब्राह्मण और बसंत सेना की प्रेम का नाटक किया स्त्रियों के संग अंग्रेजों का नाचना और आनंद लेना नहीं भाता था। उसे पता था कि अंग्रेज नाचते गाते और बांटो और राज करो की कुटिल नीति से हिंदुस्तान को रौंदते चले जा रहे हैं।

बाबा गुरु बिठूर से आए, आमिर खां के निर्देशन में तीर, बंदूक छूरी रैंकला इत्यादि चलाकर रानी का वाह्य रूप प्रचंड हो उठा.. एक दिन रानी से भेंट करने तात्या टोपे आए। फिरंगीयों के विरुद्ध युद्ध नीति पर गंभीर चर्चा हुई।सिखों की लड़ाई के नक्शों का भी अध्ययन किया गया।दिल्ली और मेरठ आदि के मुसलमान भी जान की बाजी लगा देने को तैयार थे.... इसी बीच दामोदर राव का जनेऊ संस्कार भी सम्पन्न हुआ।....गुलाम गौस खाँ ने सन 1781 ई0 में बनी भवानी शंकर नाम की तोप को भी युद्ध के लिए ठीक-ठाक कर दिया। डाकू सागर सिंह तथा साथियों को भी रानी ने अपने व्यवहार से हृदय परिवर्तन किया और अपनी सेना में शामिल किया। अंग्रेजों का प्रधान /जनरल ' रोज' का बख़्तबली से घोर संघर्ष हुआ।बख़्तबली पराजित हुआ। रानी ललित, कलाओं की प्रबल पोषीका थी। कवि ,चित्रकार ,शास्त्री यज्ञीक सभी संतुष्ट थे। 12 मार्च 1858 ई0 को 'रोज' की सेना बम और अग्नि बरसाती आखिरकार झांसी की रानी के निकट पहुंच गई।

लेकिन पीर अली की गद्दारी भयानक खेल को अंजाम दे रही थी।20 मार्च को सुबह जनरल' रोज 'में अपनी सेना के साथ तंबू तान दिया। 23 मार्च को रोज ने आक्रमण की आज्ञा दी और युद्ध आरंभ हो गया।

रानी 'राम प्रसाद बिस्मिल' के मनोभाव---

' वक्त आने दे बता दूंगा तुझे ए आसमां ,हम अभी से क्या बताएं , क्या हमारे दिल में है ' से रणचंडी बनने की तैयारी में जुट गई।

'गौस' ने कहा' जननी जन्म दिया है तोखों बस आजहीं के लाने '।

खुदाबख्श ,रघुनाथ सिंह, भाऊ बख्शी, दूल्हाजू, पूरन, सागर सिंह आदि ने भी किले के अलग-अलग प्रवेश द्वारों पर गोलन्दाज तैनात कर दिया।

स्त्रियाँ भी गोला बारूद तोप चलाने लगी।

'रोज 'को रानी के लिए कहना पड़ा 'यह रानी नेपोलियन नहीं ,जौन आव आर्क जान पड़ती है।'

तब तक तात्याटोपे चरखारी को जीतकर कालपी लौट चुका था।

इधर महाल की एक-एक इंच भूमि हेतु युद्ध हुआ।... थोड़ी देर में कलाओं का भंडार, पुस्तकालय ,वेद, शास्त्र ,पुराण ,काव्य ,इतिहास संस्कृत और फारसी के मौलिक अभिलेख जलकर भस्म हो गए।कभी रोम ,सिकंदरिया, राजग्रह में भी ऐसा हुआ था...।

रानी लक्ष्मीबाई गोद लिए बालक ' दामोदर' को चादर से अपनी पीठ पर कसा और तेजस्वी सफेद घोड़े पर 'मरो या मारो 'के लिए निकल पड़ी। वह पहुज नदी पर पहुंची फिर कालपी गई। 17 जून को ग्वालियर में युद्ध हुआ और 18 जून को घनघोर रक्त वर्षा में रानी देशद्रोहियों के छल- कपट के कारण वीरगति प्राप्त हुई.... झांसी का सूर्यास्त हो गया।

प्रसिद्ध कवित्री' सुभद्रा कुमारी चौहान 'की कलम कहती है --तेरा स्मारक तू ही होगी/तू ख़ुद अमिट निशानी थी/बुंदेले हरबोलों के मुँह/हमने सुनी कहानी थी/ख़ूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।

स्वयं जनरल रोज ने वीरता की मिसाल स्त्री को सर्वश्रेष्ठ वीरांगना बताया था।आख़िर उसने सुंदर और पवित्रता की इस शक्ति स्वरूपा को युद्ध भूमि में रणचंडी के रूप में अपनी आंखों से जो देखा था। 18 जून सन 1858 ई0 की संध्या वीरगति से रक्त रंजित हो गई थी।

समय अपनी अबाध गति से चल रहा था... रानी की ने पुत्र रत्न को जन्म दिया.... उत्सव हुआ ....फिर मातम... पुत्र की मृत्यु हो गई... शोक का सैलाब समा गया...। फिर दत्तक पुत्र लेने का प्रयास.... स्वजातीय बालक आनंद राव को गोद लिया गया

...समय और काल की मार से कोई भी बचा नहीं।रानी की पति गंगाधर राव की मृत्यु सन 1855 में हो गई।जिस समय राजा गंगाधर का देहांत हुआ तब लक्ष्मी बाई (छबीली मनु)की आयु मात्र 18 वर्ष की थी।परंतु रानी के मन में मातृभूमि की भावना थी, लगन थी ,जो उसे जीवित रहने पर विवश करती रही। स्वायत्तता और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए 20 फरवरी 1771 से ही झारखंड की प्रयोग भूमि पर पलामू किले

की कब्जी के बाद से ही शुरू हुआ और चलता रहा , क्रांति का बिगुल फूंक दिया गया था, नारा था ' खेत हमने बनाए हैं, इसलिए यह हमारे हैं ,लेकिन, अंग्रेजों की अपनी कूटनीति और संगठित सैन्य शक्ति (हथियार सहित) के कारण सफलता मिलती गई।

क्रम चलता रहा... अंग्रेज़ो का क्रूर व्यवहार -अत्याचार बर्दाश्त के बाहर था।सन 1837 में मुग़ल सिहांसन का उत्तराधिकार और बादशाह की पदवी मिली थी ' बहादुर शाह जफ़र को। लेकिन उन्हें भी 20 सितंबर 1857 को लाल किला में कैद कर रंगून भेज दिया गया। जहां 1862 में उनका इंतकाल हुआ ।सन 1854 ई0 के आरंभ में में कंपनी सरकार ने 'दामोदर 'की गोद को अस्वीकार कर दिया और झांसी को कंपनी के राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी ।झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बौखला उठी.....

' वन्दिनी जननी !

तुझे हम मुक्त कर देंगे /श्रृंखलाएं ताप से उर के गलेंगी/ की भित्तियां ये लौह की रज में मिलेंगी/ रक्त से अपने गुलाबों को खिलाकर लाल बादल/ इस तिमिर को हम उषा आरक्त कर देंगे'(महादेवी वर्मा)

' यहीं कहीं पर बिखर गई वह,- भग्न -विजय -माला -सी

उसकी फूल यहां संचित हैं, है यह स्मृति शाला -सी

सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला -सी

आहुति- सी गिर पड़ी चिता प,र चमक होती ज्वाला - सी'

(झांसी की रानी की समाधि पर कविता से)

'आज़ादी का इतिहास कही

काली स्याही लिख पाती है ?

इसके लिखने के लिए

ख़ून की नदियां बहाई जाती हैं।'

हे मेरे वतन के लोगों ! भले ही ख़ूब नारा लगा लो, लहरा लो तिरंगा प्यारा, लेकिन जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी.... इस लेखनी को विश्वास है कि आप सबकी आंखों में कुछ तो पानी बचा ही होगा।

ओस की बूंद से बनती है बेटियां । मां-बाप की प्यारी होती है बेटियां।

दो - दो कुलों को करीना करती है बेटियां । सृष्टि के सृजन की गंगोत्री है बेटियां । बेड़ियों को भी काटती है बेटियां । वक्त आने पर रणचंडी भी बन जाती है बेटियां। वीरगति को भी चूमती है बेटियां.... ऐसी ही एक बेटी थी जो काशी (बनारस)में पैदा हुई किशोरी हुई ,युवा हुई, बलिदानी हुई....।

इस बेटी की शौर्य गाथा से पहले यह बताना भी आवश्यक हो जाता है की नारी /स्त्री /महिला का अर्थ क्या होता है ?महिला 'मह' और' महि' से बना है।'महि' का अर्थ है पृथ्वी, धरती, अर्थात महिला पृथ्वी की तरह सहनशील ,सदा देने वाली, उर्वरक, उर्जा से परिपूर्ण अनेक रहस्य को अपने गर्भ में छिपाए रखने वाली होती हैं।

इन्हीं गुणों के कारण धरती को पूजा जाता है और स्त्री पृथ्वी के सभी गुणों का प्रतीक है ।इसलिए वह भी पूजनीय है। इतना ही नहीं वह शक्ति रूपेण भी है ।और हिमाद्रि तुंग श्रृंग से स्वयं प्रभा समुज्जवला

प्रबुद्ध शुद्ध भारती के स्वतंत्रता की पुकार को अनुप्राणित कर एक बेटी 'झांसी 'की रानी होकर भी अपने प्राण की आहुति भी दे देती है।

क़लम आज उनकी जय बोल (दिनकर)

'अंधा, चकाचौंध का मारा,

क्या जाने इतिहास विचारा,

साक्षी हैं उनकी महिमा के

सूर्य-चन्द्र-भूगोल-खगोल'

अपनी बात

सन 1985 ई में मुझे भी झांसी की रानी के किले में घुसकर दीवारों से दास्तान -ए- दर्द सुनने का मौका मिला था ।किले के चित्र को कैमरे में कैद किया। (इस लेख में किले का चित्र फोटोग्राफी प्रकाशित किया गया है)

हर फूल कह रहा था .....

'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं । '

इदं न मम , इदं राष्ट्राय स्वाहा...

बनारस की वीरांगना बेटी बोल रही थी ----

हे मातृभूमि की बेटियों !

आज़ादी के बाद भी

हम पूर्ण आजाद नहीं हैं।

भूल जाओ कि तुम्हारी कलाइयां कमसिन है ...

बनना है तो अत्याचार ,बलात्कार, भ्रष्टाचार कुविचार ,आतंक, असुरक्षा और अन्याय के विरुद्ध ' क्रांतिबाई' बनो ...

तुम नारी नहीं नारायणी हो '

विशेष

(भारत सरकार ने झांसी रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर 'वीरांगना लक्ष्मीबाई ' रेलवे स्टेशन करने का एक सराहनीय कार्य किया है)

फैशन में है ''नेल आर्ट''

महिलाओं के लंबे-लंबे खूबसूरत नाखून हाथों की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। अगर नाखूनों पर खूबसूरत तरीके से नेल पॉलिश लगी हो तो इससे हाथों की खूबसूरती और भी बढ़ जाती है। आजकल नेल आर्ट का ट्रेंड बहुत चल रहा है।.

नेल आर्ट आजकल की फैशन का अहम हिस्सा बन गया है और यह बच्चों से लेकर बड़ों तक सबका दिल जीत रहा है। बता दें कि इसमें नेल आर्ट के सरल तरीकों का पालन किया जाता था, लेकिन अब यह एक उच्च रचनात्मक क्षेत्र है जिसमें कृत्रिम नाखून भी शामिल हैं। नेल डिज़ाइन के भाग के रूप में, कुछ समय के लिए नेल पॉलिश को हरे, नीले या बैंगनी जैसे असामान्य रंगों में लगाया जाता है या प्रत्येक नाखून के लिए अलग-अलग रंगों का उपयोग किया जाता है। एक अन्य प्रवृत्ति प्रत्येक नाखून पर तीन अलग-अलग रंगों की संकीर्ण स्ट्रिप्स का उपयोग करना है। नेल्स को संवारने के लिए सोने

या चांदी के वार्निश का उपयोग किया जाता है और चमकते सितारे नाखूनों पर चिपकाए जाते हैं। किसी की रचनात्मकता और यहां तक कि व्यक्तित्व को व्यक्त करने का एक तरीका है। तथ्य यह है कि यह दर्द रहित है और अधिक से अधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। आजकल ऐक्रेलिक नाखून और नेल जैल भी बहुत लोकप्रिय हो गए हैं, क्योंकि रंग और नेल आर्ट के संदर्भ में वो नाखूनों को सजाने के लिए ज्यादा अवसर प्रदान करते हैं। वे उपयोग करने में सुविधाजनक भी हैं, खासकर यदि आपके नाखून टूटे या चिपके हुए हैं तब ये प्रक्रिया नाखूनों को ज्यादा खूबसूरत लुक दे सकती है ।

नाखूनों की देखभाल -

शुद्ध बादाम का तेल नाखूनों को मजबूत बनाने और अच्छी स्थिति में रखने में मदद करता है। बादाम के तेल में ऊँगली और नाखूनों को लगभग दस मिनट तक डुबोकर रखें और फिर नाखूनों पर और आसपास तेल की मालिश करें। नाखून के आसपास की त्वचा को नरम और चिकना रखना जरूरी है। क्यूटिकल को कभी न काटें, इनकी मालिश करें, ताकि यह त्वचा को मुलायम बनाए। फिर एक कॉटन बड का उपयोग करके धीरे से क्यूटिकल्स को पीछे धकेलें।

नोट : अपने नाखूनों की देखभाल करने के बाद आप को नेल आर्ट करने से पहले नाखूनों पर पहले बेस कोट को लगाना होगा। नेल आर्ट लगाने के बाद फिर इसमें टॉप कोट का इस्तेमाल करना न भूलें। इसके अलावा अच्छी क्वालिटी के प्रोडक्ट हमेशा ज्यादा दिनों तक चलते है।

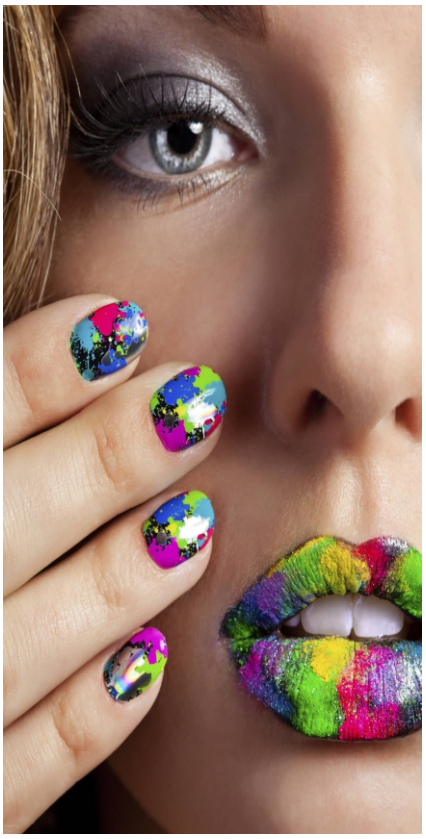

इसलिए आपको ध्यान रखना होगा कि आपको ऐसे ही नेल पेंट को चुनाव करना चाहिए जो बेस्ट क्वालिटी के हो।

लोहार्गल धाम की यात्रा

राकेश विश्वनाथ शर्मा
मुम्बई

यह राजस्थान का पुष्कर के बाद दूसरा सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है। इस जगह का संबंध भगवान परशुराम, शिव, सूर्य व विष्णु भगवान से है। इतना ही नहीं, इस स्थान पर पांडवों के साथ कुछ ऐसा चमत्कार हुआ जो इतिहास बन गया।

भारत भूमि स्वयं एक तीर्थ स्थल है, यहाँ पर देवी- देवता इस भूमि पर आने के लिए आतुर रहते हैं। अगर आपने अधिकांश तीर्थ कर लिए किंतु तीर्थों के गुरु ' लोहार्गल धाम जी ' की यात्रा नहीं की तो आपको सम्पूर्ण फल प्राप्त नहीं होगा। तो चलिए आज हम आपको तीर्थराज लोहागर जी की यात्रा पर ले चलते हैं। राजस्थान के झुंझुनूं जिले मे नवलगढ़ तहसील के पास अरावली की सुंदर कंदराओं मे लोहागर जी विराजमान हैं। इसका प्राचीन नाम ' लोहा- गल है। जो कालांतर मे लोहागर हो गया। लोकमान्यता के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात पांडवों के मन मैं अपने कुल के विनाश की ग्लानि थी। इस अपराध मुक्ति का उपाय उन्होंने श्री कृष्ण से पूछा? जवाब मे श्री कृष्ण नें बताया कि जिस स्थान पर तुम्हारे हथियार गल जाएंगे। उसी तीर्थ मे तुम्हारे अपराध से मुक्ति भी मिल जाएगी। पांडवों ने सभी तीर्थों की यात्रा की और इसी क्रम मे वह लोहागर जी भी पहुंचे। यहाँ पर स्थित सूर्य कुंड मे

उनके हथियार गल गये। तब युधिष्ठिर ने इस तीर्थ को ' तीर्थ राज ' की उपमा प्रदान की। इसी तीर्थ स्थल पर भगवान विष्णु के 6 अवतार परशुराम जी ने भी क्षत्रिय सहार के पश्चात तपस्या की थी। लोहागर जी मे जो जल कुंड है उसमे अनादि काल से जल धारा बह रही है। राजस्थान मे कितना भी अकाल पड़ जाये पर यह जल धारा कभी भी बंद नहीं हुई है। इसी जल कुंड के पास पांडवों द्वारा बनाया गया शिव मंदिर आज भी स्थापित हैं। आज भी सावन के महीने मे दूर दूर से शिव भक्त यही से जल लेकर कावड यात्रा शुरू करते हैं। रक्षा बंधन को यहाँ पर विप्र लोग अपनी जनेऊ यहाँ पर बदलते हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल - सूर्य कुंड के पास ही प्राचीन सूर्य मंदिर के दर्शन भी आप जरूर करें। इसके पीछे भीम कुंड भी है, जिसको दूर से देखा जाता है। क्योंकि इसके आसपास की जगह फिसलने वाली है। 400 सीडियां उपर चढ़कर श्री माल खेत जी का दर्शन भी अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य से आपको चकित कर देगा। यहा पर आने वाले यात्री पत्थरों से प्रतीकात्मक रूप से घर बनाते हैं। जिससे उनकी अपने घर की मनोकामना पूर्ण होती है। थोड़ी दूर पर सात मंजिला बावड़ी को देखना नहीं भूले। इसके पास ही संत दादूदयाल का आश्रम भी है। अगर आप पहाड़ पर चढ़ने का अभ्यास रखते हैं तो यहां की सबसे बड़ी चोटी बरखनडी आपके लिए चुनौती है। अंत मे यहां विभिन्न प्रकार के अचार भी मिलते हैं। इसकी सूंघने से मुहँ मे पानी आ जाता है, इसलिए अचार जरूर खरीदे। अगर आपने लोहागर जी की यात्रा पर जाने का मन बना लिया है तो इस सावन मे प्रस्थान कर सकते हैं किन्तु कोरोना के नियमों के साथ। आपकी यात्रा मंगलमय हो।

क्या हमने पेड़ लगाया?

निज हित के लिए हमने,
किया पेड़ों पर प्रहार है।
हर पेड़ यहाँ कराह रहा,
यह कैसा अत्याचार है?

पेड़ों को जब काट-काट,
हमनें शहर बसाया था।
खुद से एक सवाल करो
क्या हमने पेड़ लगाया था?

जहरीली हो रही हवा,
चहुँओर बीमारी छाई है।
ऑक्सीजन भी न मिल रहा,
ये कैसी विपदा आई है?

ऑक्सीजन देते पेड़ को,
कभी हमने ही कटवाया है।
ऑक्सीजन का महत्व हमें,
प्रकृति ने आज बताया है।

जल को किया बर्बाद कभी,
खरीद उसे आज पी रहे।
जल की बर्बादी कर हम,
ये कैसी जिन्दगी जी रहे?

जल है तभी प्राण है,
रखना इसका ध्यान है।
जल की बर्बादी रोक कर,
बचानी अपनी जान है।

लोभ-मोह में आकर हमने,
प्रकृति से खिलवाड़ किया।
इससे क्या नुकसान है?
क्या हमने कभी विचार किया?

रोका न गया खिलवाड़ तो,
हम चैन से कैसे सोएँगे?
जैसे धरती माँ रो रही,
एक दिन हम भी रोएँगे।

प्रकृति को अब बचाना होगा,
जागरूकता फैलाना होगा।
प्रकृति है, तभी हम हैं,
ये सब को सिखलाना होगा।

हम भी पेड़ लगाएँगे,
और हरियाली फैलाएँगे।
आओ हम संकल्प लें,
हम पर्यावरण बचाएँगे।

चन्दन केशरी
झाझा, जमुई (बिहार)

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

संदीप कुमार सिंह

पुर्व मण्डल अध्यक्ष भाजपा
वरिष्ठ युवा नेता भाजपा चंदौली

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

राहुल राय

जिला उपाध्यक्ष
भारतीय जनता युवा मोर्चा
जनपद चन्दौली

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

जितेन्द्र गुप्ता

सभासद कालीमहाल वार्ड
युवा भाजपा नेता
पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद- चन्दौली

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

नियाज अहमद अंसारी

प्रिंस होमियो हाल
दु0न0 11 लाल बहादुर शास्त्री कटरा
मुगलसराय चंदौली

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)
C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

AUGUST, 2021
PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR
NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

जितेंद्र कुमार वर्मा
तकनीकी सहायक
ब्लॉक नियमताबाद जनपद चंदौली

स्वतंत्रता दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनायें

हममीदुलाह अंसारी
ग्राम प्रधान
सतपोखरी गांव सभा